RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 7 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका

अक्टूबर 2024

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

शुभ दीपावली

EVERSHINE MARBLE GROUP

Gem Marble India Pvt. Ltd.

Aman Marble Industries Ptv. Ltd.

Mines Owner - Processors - Exporter -Importer of Marble & Granite

Factory & Office :

Sukher, NH. 8, Udaipur
(Rajasthan) India 3133001
Tel. : +91 294 2440261
Tel. : +91 294 2440561

Mines :

Morwar- Nizarna
Banswara (white)
Keshriyaji (Green)
Babarmaal (pink)

E-mail : office@evershinegroup.info | gemmarbles@gmail.com

मनीष पालीवाल 9322940093

सभी देशवासियों को दिपावली व नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

कुकसिंह गौड (सगरूण)

जिला परिषद सदस्य राजसमंद

बूढ़ा अतीत

घर के भीतर कुछ
गीत रहा करते हैं
चुपके चुपके ये
बात किया करते हैं

यादों के कुछ सैलाब यहां
अक्सर यूं शोर मचाते
हम दीवारों के प्रहरी बन
तब इनसे हाथ मिलाते

बूढ़ा अतीत
अब भी मानों
इन कमरों में बतियाता
वे बच्चे जो अब हुए बड़े
उन सबको याद दिलाता

यह घर केवल
कुछ ईंटों की दीवार नहीं
इनको अपने होने की
यूं दरकार नहीं

गुजरी यादों के हम उदास
वे अक्स नहीं
हम जीवित धड़कन
चले गये वे शख्स नहीं

तुम युगों युगों तक
याद हमें आओगे
हम खोलेंगे पट
खड़े वहीं पाओगे

बस इसीलिये
आह्वान तुम्हें करते हैं
घर के भीतर कुछ
गीत रहा करते हैं

डा. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

Jaivardhan News
www.jaivardhannews.com

सम्पादकीय

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन क्यों?

अधिकतर घरों में बच्चे यह दो प्रश्न अवश्य पूछते हैं, जब दीपावली भगवान राम के 14 वर्ष के वनवास से अयोध्या लौटने की खुशी में मनाई जाती है, तो दीपावली पर लक्ष्मी पूजन क्यों होता है? राम और सीता की पूजा क्यों नही? दूसरा यह कि दीपावली पर लक्ष्मी जी के साथ गणेश जी की पूजा क्यों होती है, विष्णु भगवान की क्यों नहीं?

इन प्रश्नों का उत्तर अधिकांशतः बच्चों को नहीं मिल पाता और जो मिलता है उससे बच्चे संतुष्ट नहीं हो पाते। आज की शब्दावली के अनुसार कुछ 'लिबरर्ल्स लोग' युवाओं और बच्चों के मस्तिष्क में यह प्रश्न डाल रहें हैं कि लक्ष्मी पूजन का औचित्य क्या है, जबकि दीपावली का उत्सव राम से जुड़ा हुआ है। कुल मिलाकर वह बच्चों का ब्रेनवॉश कर रहे हैं कि सनातन धर्म और सनातन त्यौहारों का आपस में कोई तारतम्य नहीं है। सनातन धर्म बेकार है। आप अपने बच्चों को इन प्रश्नों के सही उत्तर बताएं। दीपावली का उत्सव दो युग, सतयुग और त्रेता युग से जुड़ा हुआ है। सतयुग में समुद्र मंथन से माता लक्ष्मी उस दिन प्रगट हुई थी, इसलिए लक्ष्मीजी का पूजन होता है। भगवान राम भी त्रेता युग में इसी दिन अयोध्या लौटे थे तो अयोध्या वासियों ने घर घर दीपमाला जलाकर उनका स्वागत किया था, इसलिए इसका नाम दीपावली है। अतः इस पर्व के दो नाम है लक्ष्मी पूजन जो सतयुग से जुड़ा है, दूजा दीपावली जो त्रेता युग प्रभु राम और दीपों से जुड़ा है।

लक्ष्मी गणेश का आपस में क्या रिश्ता है और दीवाली पर इन दोनों की पूजा क्यों होती है? लक्ष्मी जी सागरमन्थन में मिलीं, भगवान विष्णु ने उनसे विवाह किया और उन्हें सृष्टि की धन और ऐश्वर्य की देवी बनाया गया। लक्ष्मी जी ने धन बाँटने के लिए कुबेर को अपने साथ रखा। कुबेर बड़े ही कंजूस थे, वे धन बाँटते ही नहीं थे। वे खुद धन के भंडारी बन कर बैठ गए। माता लक्ष्मी खिन्न हो गईं, उनको सन्तानों को कृपा नहीं मिल रही थी। उन्होंने अपनी व्यथा भगवान विष्णु को बताई। भगवान विष्णु ने कहा कि तुम कुबेर के स्थान पर किसी अन्य को धन बाँटने का काम सौंप दो। माँ लक्ष्मी बोली कि यक्षों के राजा कुबेर मेरे परम भक्त हैं उन्हें बुरा लगेगा। तब भगवान विष्णु ने उन्हें गणेश जी की विशाल बुद्धि को प्रयोग करने की सलाह दी। माँ लक्ष्मी ने गणेश जी को भी कुबेर के साथ बैठा दिया। गणेश जी ठहरे महाबुद्धिमान। वे बोले, माँ, मैं जिसका भी नाम बताऊँगा, उस पर आप कृपा कर देना, कोई किंतु परन्तु नहीं। माँ लक्ष्मी ने हाँ कर दी। अब गणेश जी लोगों के सौभाग्य के विघ्न, रुकावट को दूर कर उनके लिए धनागमन के द्वार खोलने लगे। कुबेर भंडारी देखते रह गए, गणेश जी कुबेर के भंडार का द्वार खोलने वाले बन गए। गणेश जी की भक्तों के प्रति ममता कृपा देख माँ लक्ष्मी ने अपने मानस पुत्र श्रीगणेश को आशीर्वाद दिया कि जहाँ वे अपने पति नारायण के सँग ना हों, वहाँ उनका पुत्रवत गणेश उनके साथ रहें। दीवाली आती है कार्तिक अमावस्या को, भगवान विष्णु उस समय योगनिद्रा में होते हैं, वे जागते हैं ग्यारह दिन बाद देव उठनी एकादशी को। माँ लक्ष्मी को पृथ्वी भ्रमण करने आना होता है, शरद पूर्णिमा से दीवाली के बीच के पन्द्रह दिनों में। इसलिए वे अपने सँग ले आती हैं, अपने मानस पुत्र गणेश जी को। इसलिए दीवाली को लक्ष्मी गणेश की पूजा होती है। यह कैसी विडंबना है कि देश और हिंदुओ के सबसे बड़े त्यौहार का पाठ्यक्रम में कोई विस्तृत वर्णन नही है और जो वर्णन है, वह भी अधूरा है।

सम्पादक

बोल उठा नन्हा सा दीपक, दूंगा प्रकाश मैं

भारत बहु आयामी लोक संस्कृति और त्योहारों और उत्सवों का देश है, जो परम्पारगत तरीके से सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों के साथ अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने में कामयाब रहा है। सतयुग, त्रैतायुग, द्वापरयुग और कलयुग इन चार युगों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के सिद्धान्त को मानव जीवन को जीने का आधार स्तंभ बना कर सनातन धर्म की व्याख्या की है, साथ ही इस देश में ऋतुओं का भी बड़ा महत्व है, ऋतुओं के आधार पर हमारे देश के तीज और त्योहार मनाए जाते रहे है, कृषि प्रधान देश होने की वजह सें कृषि पौराणिक सभ्यता से लेकर आधुनिक सभ्यता तक भारत की मिट्टी की रगो में बसी हुई है। आज भी पैंसठ प्रतिशत आबादी गांव और ढाणियों में निवास करती है जिनका मूल व्यवसाय खेती और पशुपालन ही है। खेती भी मौसम और ऋतु अनुरूप ही बोई और काटी जाती है और जब फसल पक कर कटने का समय आता है, तब कोई ना कोई त्योहार बड़े हर्ष और उल्सास के साथ ग्राम वासी ऋतु अनुसार मनाते हैं।

ग्रीष्म, शरद, हेमंत, शिशिर, वसंत हर ऋतु में एक अलग ही आनंद और उत्साह लोगों में देखने को मिलता है। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार दीपावली का पर्व सनातन संस्कृति का सबसे बड़ा पर्व है, अंधकार के प्रकाश की तरफ बढ़ते हुए कदम सकारात्मक ऊर्जा के साथ दीपक को प्रतीक बनाते हुए, आशा और विश्वास का सबसे बड़ा त्यौहार है। रावण का वध करके लंका विजय के बाद प्रभु श्रीराम का अयोध्या आगमन की खुशी में पूरी अवध नगरी को सजाया गया और स्वागत द्वार बनाए गए, घर-घर में दीपक जलाए, रंगोलिया सजाई गई। अपने राजा का स्वागत अवध की नगरी में बड़े उल्लास उत्सव के साथ मनाया, जो दीपावली के पर्व के नाम से जाना जाता है। अन्य मान्यता अनुसार मां लक्ष्मी जी का आगमन, लक्ष्मी जी की पूजा और धन्वंतरि की पूजा धनतेरस रूप चौदस, दीपावली खेखरा और भाई दूज पांच दिवसीय इस उत्सव और त्यौहार को भारतवासी धुमधाम से मनाते है। हिंदू और सनातन धर्म की मान्यता अनुसार जीवन में प्रकाश पुंज का बहुत ही महत्व है, आदमी का जीवन मां के गर्भ के अंधकार से शुरू होता है, नौ महीनों बाद शिशु प्रकाश पुंज में आता है अंधेरे से रोशनी की तरफ बढ़ते हुए कदम में दीपक की रोशनी से लेकर सूर्य की तेज रोशनी और चांद की शीतलता भरी चांदनी की रोशनी से हमेशा जगमगाता है। दीपावली भी अमावस की काली रात को आती है, उस घोर अंधेरे में दीपक की जगमगाती रोशनी प्रतीक है उजालें का एक दीपक जो रात भर जलकर रोशनी लुटाता है, उस में त्याग छुपा हुआ है। खुद जलकर दूसरों के जीवन में प्रकाश करना, एक नन्हें से दीपक से सिखा जा सकता है। सूरज भी उस दीपक की इज्ज़त करता है जो तमस को मिटाने के लिये रात भर जगता है।

सूर्य जग से प्रश्न करता है, उसका उत्तर दीपक के अलावा किसी के पास नही होता है। संध्या समय सूरज बोला मेरा कार्य करेगा कौन ? सुना सभी ने किन्तु सहम कर, बना रहा सारा जग मौन। तब बोल उठा नन्हा सा दीपक, वचन बंध होता हूं ईश। यथाशक्ति दूंगा प्रकाश में, बना रहे प्रभु का आशीष। दीपक की तरह हम भी देश हित में समाज हित में परिवार हित में जलते रहे और लोगों के जीवन में उजाले करते रहे तो हमारा ये जीवन भी धन्य हो जाएगा। मृत्यु लोक में कुछ अच्छे कार्य करके दुनिया से अलविदा हो जाने के बाद भी सदियो तक जमाना हमारी मिसाल देता रहेगा तो ये जीवन धन्य हो जाएगा। मैं तो बस इतना ही कहूंगा कि त्यौहारों का जीवन में जो महत्व है उसको आध्यात्मक दृष्टि से समझना उतना ही जरूरी है, जितना सामजिक भौगोलिक भौतिक दृष्टिकोण से समझना। प्रकृतिवादी इस जीवन शैली में प्रकृति का जो योगदान है उसे याद करते हुए प्रकृति के हर कण में परमात्मा का निवास मानते हुए उसका आदर सम्मान करे। प्रेम अपनेपन भाईचारे से ये जीवन जीते हुए नफ़रत राग द्वेष के अंधेरे मिटाने के लिये ज्योत से ज्योत जगाते हुए प्रेम की गंगा बहाते रहे। प्रेम के दीपक जलाते रहे, अपने परायों से प्रेम पूर्वक रिश्ते निभाते हुए हम सभी त्यौहार मनाते रहे और भारतीय संस्कृति वेदिक संस्कृति सनातन संस्कृति का परचम लहराते रहे।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली, राजसमंद

शुभ दीपावली
लक्ष्मणसिंह सापोल
सामाजिक कार्यकर्ता
सापोल, सांगठकला

दीपावली पर हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं
मुकुल इन्जीनियरिंग एंड स्पेयर पार्ट्स
संचालक
सुरेश श्रीमाली
पोकलेंड व जेसीबी स्पेयर पार्ट्स, इलेक्ट्रीकल पार्ट्स, बेरिंग, ऑयल, ग्रीस, नट बोल्ट, वायरसा एसेसरीज एवं सभी माइनिंग सामान उपलब्ध है।
वनी, सापोल, तहसील व जिला राजसमंद, मो. 9549583744

मंडी में मंदी

अभी त्योहारी सीजन चल रहा है, चारों और बाजार सजे हुए, व्यापारियों को इंतजार है ग्राहकों का, लेकिन बाजार से ग्राहक नदारद दिखाई दे रहे हैं। इसी चिंता में डूबे हुए कई व्यापारी अपने भविष्य को लेकर आशंकित है, वह सोच मैं डूबे हुए हैं कि आखिर हमारा और हमारे परिवार का क्या होगा, इसके पीछे कारण बहुत है। आखिर व्यापार को इस हालत में पहुंचाने वाली क्या बात है जो धीरे-धीरे दीमक की तरह व्यापार और बाजार को खत्म कर रहा है, इसमें प्रमुख कारण जो निकल कर सामने आ रहे है, वह है ऑनलाइन मार्केट का बाजार पर हावी होना, लुभावने ऑफर में उलझता हुआ ग्राहक बाजार की और रुख करने से कतराने लगा है। वह आज इतना आलसी हो गया है कि अपने मोबाइल में देखते-देखते वह सोफे पर ही बैठकर उसके काम में आने वाली वस्तुओं को ऑनलाइन बुक कराता है और तीन, चार दिन के भीतर ही वह समान उसके घर पर आ जाता है, लेकिन वह यह नहीं सोच पा रहा है कि इससे उसके जीवन पर भी आने वाले कुछ समय में दुष्परिणाम दिखाई देने लगेंगे, क्योंकि जीवन चक्र एक दूसरे पर ही निर्भर है, जब यह चक्र खंडित होगा तो निश्चित तौर पर एक आम आदमी पर भी इसका प्रभाव दिखाई देगा जिसकी कल्पना बहुत ही भयावह होगी। दूसरा कारण यह भी दिखाई देता है कि आजकल हर इंसान बिना कामकाज किए हुए पैसा कमाना चाहता है, वह जल्द अमीर बनना चाहता है, इसके लिए वह रास्ता चुनता है ऑनलाइन सट्टेबाजी का। वह उसमें इतना मगन हो जाता है और उसका नशा उसके सर पर चढ़कर बोलने लगता है। वह रात दिन यही सोचता है कि यही रास्ता मुझे बहुत ही जल्द अमीर बना देगा, लेकिन परिणाम इसके विपरीत आते हैं, वह सब कुछ लूटा कर ऐसी स्थिति में आ जाता है जिसकी कल्पना कभी उसने की ही नहीं थी, इन सभी के परिणाम भी बाजार पर पड़ रहे हैं। आजकल मार्केट में एक नया ट्रेंड चल रहा है शेयर बाजार में पैसा लगाओ और कुछ ही दिनों में अमीर बन जाओ लेकिन वह वहां पर भी फेल होता हुआ ही दिखाई दे रहा है। वह उस गणित में ऐसे उलझ के रह जाता है कि वह किसी को कुछ बताने लायक भी नहीं बचता, उसे शेयर मार्केट का ज्ञान ना के बराबर होते हुए भी वह अपनी पूंजी को उसमें लगा रहा है क्योंकि वह रातों-रात पैसे वाला बनना चाहता है और वह भी बिना काम किए हुए। ऐसे में आज बाजार की हालत शेयर मार्केट की वजह से बहुत ही दयनीय स्थिति में पहुंच चुकी है, क्योंकि लोगों का पैसा शेयर बाजार में डूब चुका है, वह कर्जदार हो गए हैं। इन सभी बातों का व्यापार पर बहुत असर पड़ा है, इस वजह से देखा जाए तो भारत के सबसे बड़े त्योहार दीपावली पर भी बाजारों में ग्राहक नजर नहीं आ रहे हैं इसलिए हमें और आपको सोचना पड़ेगा कि हम ज्यादा से ज्यादा अपने करीबी व्यापारी से सामान खरीदे ना कि ऑनलाइन और दूसरा हमें जिस चीज का ज्ञान नहीं है उसमें पैसा लगाने से बचें ताकि आपकी जमा पूंजी को आप अपने ऊपर खर्च कर सके। जिससे आपका परिवार और आप खुशहाली की जिंदगी जी सके।

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली, राजसमंद

राजस्थान शिक्षक संघ (अम्बेडकर) जिला- राजसमंद
पंजीयन संख्या COOP/ALWAR/201792 संबद्धता 72/1953-54 अखिल राजस्थान अनुजाति/ जनजाति/ पिछड़ी जाति/ अधिकारी कर्मचारी महासंघ
कन्हैयालाल करोतिया
जिलाध्यक्ष, राजसमंद, मो. 97846 24255

शुभ दीपावली
FESTIVAL OF LIGHTS
MIRAJ
FMCG
हर ब्रेक बनाये Great
MIRAJ Classic tea
MIRAJ Red tea
आपके नजदीकी रिलायंस स्टोर्स पर उपलब्ध
Order online at: www.mirajonlinestore.com
डिस्ट्रीब्यूटरशिप के लिए सम्पर्क करें: 9783 437 437
मिराज एफएमसीजी के अन्य उत्पादः टोस्ट, वैफर्स, नमकीन, स्टिक्स, फ्राईम्स, रेडि टू ईट, फ्रोजन फूड

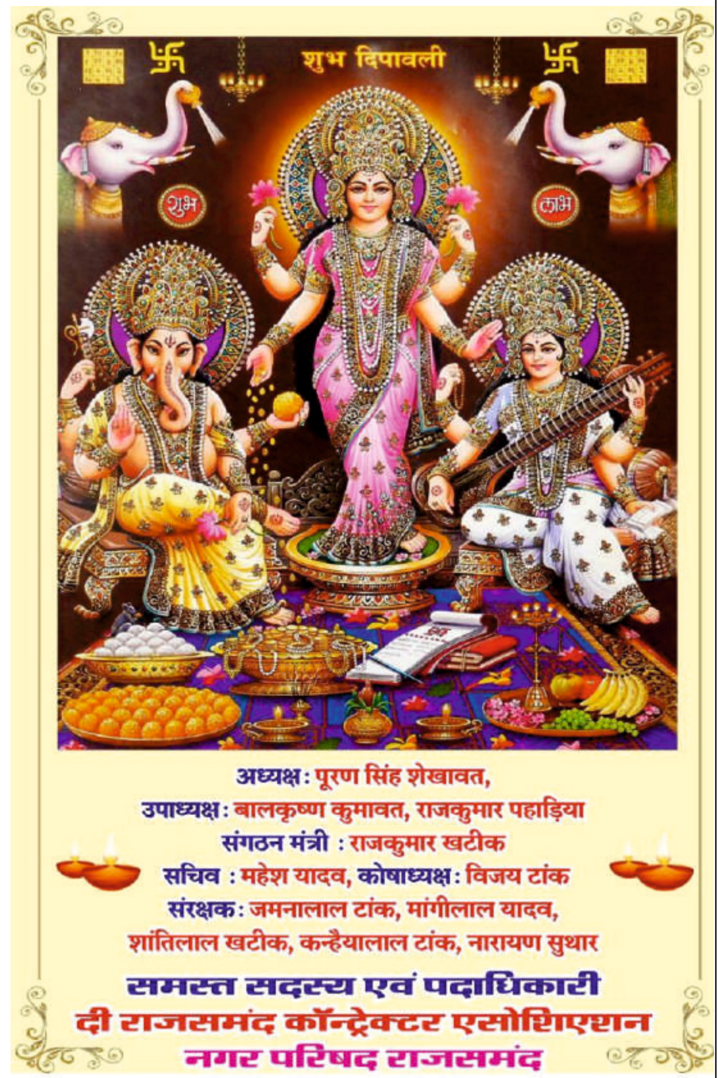

शुभ दिपावली
शुभ
लाभ
अध्यक्ष: पूरण सिंह शेखावत,
उपाध्यक्ष: बालकृष्ण कुमावत, राजकुमार पहाड़िया
संगठन मंत्री : राजकुमार खटीक
सचिव : महेश यादव, कोषाध्यक्ष: विजय टांक
संरक्षक: जमनालाल टांक, मांगीलाल यादव,
शांतिलाल खटीक, कन्हैयालाल टांक, नारायण सुथार
समस्त सदस्य एवं पदाधिकारी
दी राजसमंद कॉन्ट्रेक्टर एसोशिएशन
नगर परिषद राजसमंद

दीपावली के पावन पर्व की जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं
भगवतीलाल खटीक
लालबाग, नाथद्वारा, जिला राजसमंद
प्रहलाद खटीक

दीवाली तक ही मौका है

जनाब के तेवर देख कर साफ़ लग रहा था, अब भ्रष्टाचार की खैर नहीं, अपन को किसी से दोस्ती नहीं भाई अपन को किसी से बैर नहीं। भ्रष्टाचार भी अपना ही है कोई भी तो गैर नहीं, ये इक कांटों भरा जंगल है कोई गुलशन की सैर नहीं। चलो आपको पहले इसकी पुरातन महिमा सुनाते हैं, लेन देन को लोग असली प्यार बताते हैं। सदियों पहले जब अंग्रेजी हुक़ूमत थी, सरकार जनाब से मिलने को चपरासी को इक बीड़ी पिलाई थी। चिंगारी सुलगाई कभी नहीं बुझ पाई थी, अगली बार देश आज़ाद हुआ बड़े बाबू की बारी आई थी, उनको इक चाय पिलवाई थी, दूर हुई कठिनाई थी। भगवान भ्रष्टाचार भाईचारा तीनों की कुंडली एक है बात की गहराई जिस को समझ आई थी उसने अपनी डूबती नैया पार लगाई थी। नये-नये मंत्री बने नेता ने दीवाली तक की अवधि बताई थी, समझने वालों को स्कीम नव वर्ष तक बढ़ेगी, आगे भी बढ़ती रहेगी भविष्वाणी नज़र आई थी। आखिर इक ख़ास अधिकारी ने उनसे मतलब पूछा था, कल तक आपके दल ने घोषणा पत्र में ईमानदारी की मिसाल कायम की है, ये प्रचार चलाया था। आपने अपनी ही पिछली सरकार में पैसे का खेल चलता रहा, कहकर इक तमाचा लगाया है। कुछ भी समझ नहीं आया है। पैसे नहीं मांगने की बात सही है, मगर मांगना क्या है, विकल्प नहीं बतलाया है। बिन मांगे आजकल मोती नहीं मिलते, सच है बच्चा रोता है, तभी मां दूध पिलाती है, सरकार भी जो जितनी झोली फैलाए हैं, उसको उतनी खैरात बंटवाती है।

आपका आभार इक अगला सबक पढ़ाया है, लेकिन आधा अधूरा है। पाठ क्यों दुनिया को भरमाया है, झूठी मोह माया है। सब फिर कैसा जाल बिछाया है। कभी राजनेताओं का, सरकारों का ख़ाली पेट नहीं भरता है, जिसने भी बजट बनाया है, जनता को बहलाया है। खाया भी, खिलाया भी और हर दिन उड़ाया है। हर दिन सभाओं में पैसा पानी की तरह गया बहाया है। अधिकारी कर्मचारी और शासक मिलकर गंगा में डुबकी लगाते हैं, कुछ को मिलती सीपियां हैं, कुछ मोती पाकर इतराते हैं। घोटालों की क्या बात है, हर किसी का इक प्याला है। इस देश में जनता का बस इक वही ऊपरवाला है। सत्ता का दस्तूर निराला है, जो गोरा है वही काला है खेल यही मतवाला है। किस किस ने किसको पाला है, हर मुंह में कोई निवाला है भिखारी सारी दुनिया है दाता इक राम है ये बात बड़ी आसान है काम का होता दाम है। बिना दाम कोई नहीं करता काम है, सबको भाता विश्राम है। रिश्वत का नाम बड़ा बदनाम है ये तो इक महादान है करता सबका कल्याण है। आपने गज़ब फ़रमाया है त्यौहार का उपहार बंटवाया है इस तरह से नित नई योजनाओं ने जनता को ठगा उल्लू बनाया है।

कुछ लोग हर रोज़ शहर में अपनी सत्ता की लाठी चलाते हैं, पुलिस वाले, नगरपरिषद वाले से बड़े अधिकारी तक सब्ज़ी फल से ज़रूरत का सामान तक चपरासी भेज मंगवाते हैं। पैसे नहीं मांगते बस मुफ़्त का माल खाकर गुज़ारा चलाते हैं, इसको घूस नहीं मानते रिश्ते निभाते हैं, जब कोई कानून अड़चन हो काम आते हैं पकड़े जाने पर बचाते है। ये परंपरा है भूखों को जो खिलाते हैं पुण्य कमाते हैं, आपको इक सच्ची घटना बताते हैं। इक व्यापारी पर हिसाब-किताब में हेराफेरी ढूंढने को छापा पड़ा, कोई गलती हिसाब किताब में नहीं पकड़ी गई तो अधिकारी ने कहा सेठ जी आपका बही खाता सही है पर सुबह से कुछ नहीं खाया जाने से पहले कुछ खाना मंगवा दो। मुनीम जी होटल से खाना खरीद कर लाये सभी खा कर खुश हुए, तब मुनीम जी ने पूछा सेठ जी ये खर्च किस पर हुआ बही में लिखना है, सेठ जी ने कहा लिख देना इतने पैसे की रोटी भूखे कुत्तों को खिलाई है सुन कर असलियत समझ आई यही होती है चतुराई। भैंस अपनी हुई पराई सरकारी लोग खुद को समझते हैं घर जंवाई, उनको चाहिए दूध मलाई छाछ जनता की ख़ातिर है बचाई। आपको किसने रोका है ईमानदारी की बात सबसे बड़ा धोखा है, दीवाली तक का अभी मौका है उस के बाद चौका है। कैच नहीं होगा, दावा है नो बॉल है, भ्रष्टाचार ख़त्म कभी नहीं होगा, बस बाल की खाल की मिसाल है। ये चलन बख़्शीश देने से शुरू हुआ था, अब छीनने तक पहुंचा है, भ्रष्टाचार विकास कहलाता है, जो देता है वही पाता है, आधुनिक भाग्य विधाता है, कौन ऐसा करते शर्माता है।

डॉ लोक सेतिया
एससीएफ 30, मॉडल टाउन
फतेहाबाद, हरियाणा, 125050
मो. 9416792330

दीपावली का जादुई मंत्र

जीवन में प्रकाश का बड़ा महत्व है। प्रकाश नहीं तो जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है। प्रकाश के उपकरण में सूरज और चंद्रमा के बाद दीपक का स्थान है। सूरज दिन के लिए है और रात में चंद्रमा है। लेकिन रात्रि में जीवन-व्यवहार को ठीक-ठीक संपादित करने के लिए मानव-जीवन का दीपक एक मात्र सहारा है।

बाहर प्रकाश है और प्रकाश है तो उसके पीछे लगा हुआ अंधेरा भी है। कुछ लोग आँख होने पर भी अंधे के अंधे होते हैं। उनके लिए दिन भी घोर अंधकार ही बना रहता है। व्यक्ति की आँख पर कब पर्दा गिर जाए कोई कुछ नहीं कह सकता। इसलिए हर एक व्यक्ति को मार्गदर्शक की आवश्यकता होती ही है। दीपक से अच्छा कौन मार्गदर्शक हो सकता है? एक अच्छा मार्गदर्शक मिलना उसी तरह मुश्किल है जैसे, एक अच्छे गुरु का मिलना। साथ ही अच्छे गुरु को एक अच्छा शिष्य का मिलना भी सौभाग्य की ही बात हुआ करती है। यह चिंतन कर के ही भगवान बुद्ध ने उपदेश देते हुए "आत्मदीपो भव" का मंत्र अपने शिष्यों को दिया।

भीतर का अंधेरा व्यक्ति को अधिक दर्द में डुबो देता है। इसलिए 'आत्मदीपो भव' मंत्रानुसार अपने भीतर के दीपक को प्रकाशित कर स्वयं को ही मार्ग तय करना है। दुख से मुक्ति को प्राप्त करना है। जो व्यक्ति अपना मार्ग तय न कर सके, जो अपनी बुद्धि का ठीक-ठीक सदुपयोग न कर सके उस 'हियेफूटे' के लिए तो दिन क्या और रात क्या? सर्वत्र अंधेरा ही अंधेरा मिलना उसकी नियति है। अपने हृदय में उजाला हो और व्यक्ति अपनी बुद्धि से जगमगाता हुआ अंदर का प्रकाश बाहर भी फैलाना प्रारम्भ कर देता है, तभी दीपावली की प्रस्तावना बन जाती है। दीपावली के लिए स्वयं का दीपक बनना पहली और अंतिम शर्त है।

"आत्मदीपों भव" बड़ा ही कमाल का मंत्र है। इसकी अभिव्यक्ति भले ही बुद्ध ने लगभग "पाँच सौ ईसा" पूर्व की है। लेकिन, इस बात की समझ व्यक्ति को आठ हजार ईसा पूर्व हो गई थी। यह वह समय है, जिसमें मानवीय सभ्यता पाषाण युग से आगे बढ़ चुकी थी। व्यक्ति को यह समझ में आने लग गया था कि जीवन को मात्र हिंसा से नहीं चलाया जा सकता। इसलिए व्यक्ति ने कृषि करना जाना और प्रसन्नता का सूत्र खोजा। कृषि-कौशल से सम्पन्न समाज द्वारा फसल उगी होगी, घर भरे होंगे। एक साथ फसल घर भरने लगी। बस्तियाँ खुश हुई होंगी तब सामूहिक रूप से दीप प्रज्वलित हुए होंगे। तब कहीं जाकर दीपावली हुई होगी। इस तरह दीपावली का प्रथम प्रसंग व्यक्ति की प्रसन्नता की अभिव्यक्ति ही कहें तो अनुचित नहीं होगा। समाज की संपन्नता, संतुष्टि, श्री और सौभाग्य का सूचक दीपावली का पर्व तभी से बन गया है।

स्वयं प्रकाशमान होकर समाज को दिशा और दशा प्रदानकर सम्पन्न बनाने का उदाहरण त्रेतायुग के उत्तरार्ध में मिलता है। प्रभु श्री राम एवं लक्ष्मण जी को ऋषि विश्वामित्र जी अपने आश्रम में यज्ञ की रक्षा करने के लिए ले आए। राक्षसों ने बहुत उत्पात मचा रखा था। यज्ञों की रक्षा तो हो गई लेकिन, राम के अंदर का दीपक प्रज्वलित हो गया। जब-जब अंतर मन की ज्योति प्रदीप्त होती है तब-तब व्यक्ति को यथार्थ दृश्य और गूढ़ प्रवृतियों का दर्शन हो जाता है। व्यक्ति समय सापेक्ष होकर समकालीन जीवन प्रवृतियों का संस्थापक हो जाता है। राम तो राम हैं। किशोरवय श्री राम ने ठीक से तत्कालीन सामाजिक स्थितियों और प्रवृतियों को अनुभव किया। राक्षसों की हिंसक प्रवृतियों ने भय भर रखा था। यज्ञ-कर्म नहीं हो रहे थे। समाज का कोई भी वर्ग और पक्ष सुरक्षित नहीं था। तब विश्वामित्र जी के यज्ञों की रक्षा करने के साथ ही ऋषि जन और ब्राह्मणों के सम्मुख पृथ्वी को राक्षसों के अत्याचारों से मुक्त कर लेने की शपथ ले ली। तभी प्रसन्न होकर विश्वामित्र जी ने श्री राम-लक्ष्मण को बला और अतिबला विद्या प्रदान की। बला शिक्षा से भूख और प्यास से मुक्ति हो जाती है और, अतिबला से बिना थके योद्धा युद्ध करते रह सकते हैं। "आत्मदीपों भव" की प्रवृति से स्वयं का प्रकाशमान होते ही व्यक्ति संकल्पबद्ध हो जाता है। राम संकल्पबद्ध हुए। अपनी शपथ को चौदह वर्षों तक स्मरण करते रहे। भरत द्वारा स्नेह और सम्मान के वशीभूत होकर श्री राम को वन-गमन को मुखरित स्वर में अयोध्या के हित में लौट जाने का निवेदन करते रहे। भरत का निवेदन व्यर्थ ही हुआ। राम अपने शपथ से पीछे नहीं हटे। अपनी शपथ को चौदह वर्षों के वनवास की अवधि में पूर्ण किया। भारत-भूमि को राक्षसों के अत्याचारों से मुक्त कर के ही संतुष्ट हुए। ऋषियों, ब्राह्मणों और स्त्रियों के साथ-साथ निम्न और दलित वर्ग को सम्मान मिला। स्वतन्त्रता का अधिकार तथा मानवीय मूल्यों को विकसित होने के लिए सभी को बराबर अवसर प्राप्त हुए। मनुष्यों और अन्य जीव-जगत के मध्य के अंतर को ही पाट दिया। मनुष्यों के साथ-साथ जीव-जगत की प्रतिष्ठा कर दी। पुरुषप्रधान समाज में स्त्री-वर्ग को आदरणीय और वंदनीय बना दिया। इन्हीं सभी उपलब्धियों से राम द्वारा समाज में जीवन और शांति की पुनर्स्थापना हुई। असत्य पर सत्य की और अंधकार पर प्रकाश की प्रतिष्ठा करने वाले राम का अयोध्या पहुँचने पर समाज की प्रसन्नता का पपारावार हिलोरें मारने लगा। सीता-राम और लक्ष्मण के भव्य और आत्मीय स्वागत में दीपावली सजाई गई। इस तरह दीपावली पहली बार सामाजिक आयोजन बना। तब से ही दीपावली-पर्व भारत-भू पर ही नहीं अपितु, भारत के बाहर भी कई देशों में सोल्लास मनाया जाता है।

दीपावली की जगमगाती कतार में सबसे महत्वपूर्ण दीपक तो आप स्वयं ही बनने वाले हैं। क्योंकि आप ही श्री राम और कृष्ण के जैसे बनते हैं। द्वापर युग में श्री कृष्ण के अंतर का दीपक तो बाल्यावस्था में ही प्रकाशमान हो गया। कंस के शोषण ने समाज की जो दुर्दशा कर दी, वह प्रभु श्री कृष्ण के जीवन-चरित्र को पढ़ने-सुनने से ठीक-ठीक समझ में आ जाता है।

"आत्मदीपों भव" का मंत्र जादुई ही कहूँगा। वह प्रज्ञा चेतन कर व्यक्ति में समझ पैदा करता है। इस समझ से व्यक्ति को समय और

परिस्थितियों के साथ समाज की एवं स्वयं की दिशा और दशा का ज्ञान हो जाता है। श्री कृष्ण की नेतृत्व शक्ति स्तुत्य रही। तत्कालीन समाज का असंगठित एवं असमर्थ स्वरूप चिंतनीय था। कृष्ण ने समाज को संगठित किया। उनको उनके अधिकारों से परिचित कराया। कंस के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए प्रेरणा-पुरुष बने। यही तो "आत्मदीपो भव" मंत्र का चमत्कारिक संस्पर्श रहा।

लंबे अंतराल बाद श्री कृष्ण-बलराम जी ने न केवल कंस और उसके शोषण का अंत किया अपितु, समाज को दिशा दी। समाज को संगठित कर गिरिराज पर्वत को धारण किया। सामाजिक संगठन और सुंदर कार्य-योजना से जल-विप्लव से ब्रज-क्षेत्र की रक्षा की। अधर्म के स्थान पर धर्म की प्रतिष्ठा की। समाज की दशा ठीक करने का वंदनीय युगधर्म का निर्वाह किया। फलस्वरूप, एक बार पुनः इस भारत भू पर सत्य ने चमकदार रूप लेकर पैर जमाए। धर्म ने अपनी धवल पताका फहरा दी। दशों दिशा में स्वर्णिम प्रकाश फैल गया। तब भी जनमानस के उल्लास का उदधि पूर्ण वेग और उत्साह से हिलोरें लेने लगा। घोर अमावस्या की कालरात्रि भी रजत चाँदनी रात की तरह दूधों नहाई और पूतोफलो की तरह फलीभूता हो गई। समाज में स्नेह की धारा भर गई। मानवीय और सामाजिक मूल्यों के साथ धरती-धन, कृषि और गौ-धन की मान्यता बनी। जीवन में अनुराग और निज अधिकारों की प्राप्ति के अवसर सुलभ हुए। आम जन-जीवन सरल और सहज हुआ। इस सुंदर संदर्भ ने तो दीपावली के उत्सव को चार-चाँद ही लगा दिए।

मनुष्य के जीवन में श्री और सौभाग्य की प्रतिष्ठा को जरूरी मान लिया गया। धरती और कृषि के साथ गौधन को इसका आधार स्वीकार किया। जीवन में अनुराग और उत्सवधर्मिता का स्थान तय हो गया। अब दीपावली साज-सज्जा तक ही नहीं सीमित रहा, वह विभिन्न कलाओं को लेकर जीवन की अभिव्यक्ति करने लगा। गीत और नृत्य से झंकृत होकर मनोहर, पाक-कला से मीठा हो, चित्रकला से दर्शनीय होने के साथ पटाखों के धमक से रोमांचित कर देने वाला हो गया। दीपावली की जगमग करती कतार द्वारा अंधकार को ललकारने से यह प्रकाश-पर्व वरेण्य हो गया।

'आत्मदीपों भव' सही मायने में सुखी और आनंदित जीवन की प्रतिष्ठा है। हम और हमारा सम्पूर्ण भारतीय समाज अमानवीय कृत्यों से मुक्त एवं जीवन मूल्यों से युक्त होकर सुखी और आनंदित हैं, तब ही दीपावली मनाना हमारा अधिकार बनता है। इस के लिए समाज के प्रत्येक जन और परिवार की खुशी और संतुष्टि जरूरी है। यह खुशी और संतुष्टि राष्ट्र के संदर्भ में सामूहिक और बिना भेदभाव और छल रहित अपेक्षित है। देश के संदर्भ में हर व्यक्ति पहले भारतीय है, उसके बाद वह धर्म-दर्शन एवं संप्रदाय से कुछ भी है तो है। उसका हार्दिक सम्मान है, अभिनंदन है यदि वह सच्चा भारतीय और देश-भक्त है।

"आत्मदीपों भव" मंत्र के हम आभारी हैं। देश के जन नायकों ने समय-समय पर देश और समाज की नाड़ी को समझा है। उस की रुग्णता का उपचार किया। विदेशी लुटेरे और लालची व्यापारी भारत भूमि तक पहुँचे। इस देश को लूटा-खसोटा और यहाँ के शासक बन गए। निजी आलोक से अलंकृत जन-नायकों को समझ में आ गया यह सब हमारे लिए उचित नहीं है। कई शताब्दियों तक भारतीय जनमानस को साथ लेकर जन-नायकों ने संघर्ष कर स्वतन्त्रता का सुंदर फल हमारी झोली में रख दिया। इस सब के पीछे कई लोगों का उत्सर्ग है। कुछ स्वनाम धन्य हो गए, कुछ अभी भी हमारी जानकारी से कहीं दूर हैं। समय उन्हें भी जगमगाते दीपकों की पंक्ति में सम्मिलित अवश्य कराएगा।

लेकिन सोचने वाली बात यह है कि अंग्रेजी सत्ता को हमारे देश से खदेड़ दिये के जाने के बाद भारत की दशा और दिशा क्या ठीक हुई है? उसका उत्तर हाँ है। हाँ, विगत एक दशक के अंदर भारत के विश्वमंच पर बढ़ते हुए प्रभाव और सम्मान को देखते हुए संतोष प्रकट किया जा सकता है। उसे देख कर लगता है कि देश कि दिशा ठीक है और दशा उत्तरोत्तर सुधरती चली जा रही है। लेकिन वैश्विक व्यवहार को देखकर सदैव सावधान रहने की महती आवश्यकता है।

लोकतन्त्र के कई गुण हैं। लेकिन, उसकी विशिष्टताओं में ही कई कमियाँ भी अनुभव होती हैं। जिसके कारण जनता द्वारा चुने हुए ही लोग किस-किस तरह का दाँव-पेंच खेलकर जनता के हितों को बाधित करते हैं। यह सब छिपा हुआ नहीं है। देश के सबसे ईमानदार राजनेता ने इस बात को प्रमाणित भी कर दिया। वोट की राजनीति ने अंग्रेजों की तरह ही हमें बाँटती है, लड़ाती है और हमें एक दूसरे से अलग कराने के घृणित हथकंडे अपनाती है। ऐसे में दीपावली फीकी हो ही जाती है। दीपावली तभी आनंदित करने वाली होगी जब हर भारतीय का जीवन खुशहाल होगा। उसके लिए यह आवश्यक है कि हम बंटे नहीं।

हर भारतीय संगठित रहे। हमारा संगठित रहने पर ही देश बना रहेगा। हमारे धर्म बने रहेंगे। हमारी संस्कृति बनी रहेगी। हमारे आचार-विचार, भाषा-भूषा और साहित्य बचा रहेगा। हमारे पर्व-उत्सव और आदर्श बने रहेंगे। इसलिए दीपावली के सही संदर्भों और प्रसंगों के लिए स्मरण रखें - "आत्मदीपों भव"।

दीपावली की आप सभी को शुभकामनाएँ।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
वरिष्ठ साहित्यकार एवं समालोचक
शांति कॉलोनी, कांकरोली, राजसमंद (राज)
मो. 94141- 74179

ओळू आवे रे...

आजा मारा कृष्ण कन्हैया, याद सतावे रे।
ओळू आवे रे, सांवरा ओळू आवे रे।

गोकळ वन में उबी गुजरी, थने बुलावे रे,
कद आसी मारो कृष्ण कन्हैयो, हिचकी आवे रे।
आजा मारा कृष्ण कन्हैया, याद सतावे रे।
ओळू आवे रे, सांवरा ओळू आवे रे।।

गायां रे चरावती, मैं कर कर नखरा आवती,
इण नखरा ने निरखणियो,क्यूं तड़पावे रे।
आजा मारा कृष्ण कन्हैया, याद सतावे रे।
ओळू आवे रे, सांवरा ओळू आवे रे।।

वनरावन में सखियां सारी,ले ले घूमर नाचती,
कृष्ण कन्हैयो गोपियां संग,रास रचावे रे।
आजा मारा कृष्ण कन्हैया, याद सतावे रे।
ओळू आवे रे, सांवरा ओळू आवे रे।।

दिन भर मने हिचकी आवे,रात में देखूं सपणा,
मनमोवन में मनड़ो लाग्यो,इणने कूण समझावे रे।
आजा मारा कृष्ण कन्हैया, याद सतावे रे।
ओळू आवे रे, सांवरा ओळू आवे रे।।

नावण लागी सखियां सारी, चुप चुप कानो देखे रे,
प्रीतम थारी प्रीत बिना, सखियां मर मर जावे रे।
आजा मारा कृष्ण कन्हैया, याद सतावे रे।
ओळू आवे रे, सांवरा ओळू आवे रे।।

नाचे मोर पपिहा बोले, कोयलड़ी कुलरावे रे,
कृष्ण कन्हैया री मूरली बाजी, राधा दोड़ी आवे रे।
आजा मारा कृष्ण कन्हैया, याद सतावे रे।
ओळू आवे रे,सांवरा ओळू आवे रे।।

बख्तावरसिंह चुंडावत 'प्रीतम'
आमेट, राजसमंद
मो. 9413287301

जैसे आती दीवाली

हाथों में दीपक थाल सजा के
मोती से उन्नत भाल सजा के
रत्नों से दैहिक-डाल सजा के
तुम मेरे जीवन में आई
जैसे आती दीवाली।

पग-पग बिखरा जादू-टोना
जगमग निखरा कोना-कोना
लेकर आभा सोना-सोना
तुम मेरे जीवन में छाई
जैसे छाती दीवाली।

गुप्प-घनेरी काली रातें
विस्मृत जैसे बीती बातें
नित नई रोशनी की सौगातें
तुम मेरे जीवन में लाई
जैसे लाती दीवाली।

मुख-मंडल मुस्कान लिए
नैनों में निराली तान लिए
कई किरणों के गुणगान लिए
रूप-रोशनी मन को भाई
जैसे भाती दीवाली।

जैसे दीपक-बाती गाते
गाते-गाते नहीं अघाते
गीत प्रेम के गाते जाते
मधुर रागिनी हमने गाई
जैसे गाती दीवाली।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ आचार्य एवं राजभाषा संपर्क
अधिकारी,आर.एन.टी.मेडिकल
कॉलेज,उदयपुर--313001

उनकी बात क्यों ?

आज उनकी बात क्यों ?
दीप मालाएें सजाओ
जमके दीवाली मनाओ
दीप जिन दिलके बुझे हैं
आज उनकी बात क्यों ?

साज मस्ती का बजाओ
मिठी धुन में गुनगुनाओं
तार टूटे जिनके मन के
आज उनकी बात क्यों ?

रोशनी को कैद करके
आज रखलो अपने पास
खो चुके जो रोशनी को
आज उनकी बात क्यों ?

आज इनसे और उनसे
बातें अपनों से करो
हम हैं क्या और वे हैं क्या
आज उनकी बात क्यों ?

अफजल खाँ अफजल
जलचक्की, कांकरोली
मो.नं. 9828475288

शुभ दीपावली
बाबूलाल कोठारी
अनिल, विकास, मनोज कोठारी
विकास ग्रुप, केलवा (राजसमंद)

"चाहो जैसा चित्र बना दो"

मेरा जीवन खाली कागज है,
तुम चाहो जैसा चित्र बना दो।
आड़ी तिरछी रेखा खींच कर
चाहे रेखाचित्र बना दो।
चाहो तो श्वेत श्याम बना दो।
चाहो तो रंगीन बना दो।
चाहो तो हंसता बना दो।
चाहो तो रोता बना दो।
मेरा जीवन खाली कागज हैं,
तुम चाहो जैसा चित्र बना दो।।

मेरा जीवन एक वीणा हैं,
तुम चाहो जैसी धुन बजा दो।
चाहो तो तुम गमगीन बना दो।
चाहो तो अमृत बरसा दो।
चाहो तो तुम असाध्य बना दो।
चाहो तुम साध्य बना दो।
मेरा जीवन खाली कागज हैं,
तुम चाहो जैसा चित्र बना दो।।

मेरा जीवन एक नौका हैं,
तुम चाहो जिस ओर बहा लो।
चाहो तो माया में बहा कर,
सांसारिकता में डूबो दो।
चाहो तो भक्ति में बहा कर,
ईश्वर से एकाकार करा दो।
मेरा जीवन खाली कागज हैं,
तुम चाहो जैसा चित्र बना दो।।

मैं अंजान मंजिल का राही चाहो,
तो मंजिल तक पहुँचा दो।
चाहो तो तुम शूल बिछाकर,
पांवों से तुम रक्त बहा दो।
चाहो तो तुम सुमन बिछाकर,
चाहो तो हंसना सिखा दो।
मेरा जीवन खाली कागज हैं,
तुम चाहो जैसा चित्र बना दो।।

मेरा जीवन श्याम शून्य हैं,
तुम चाहो तो आभा फैला दो।
रवि बना दो शशि बना दो,
या फिर तारा सा चमका दो।
अमावस्या की रैन बना दो,
या पूर्णिमा की रश्मि बना दो,
मेरा जीवन खाली कागज हैं,
तुम चाहो जैसा चित्र बना दो।।

मनीष नंदवाना
'चित्रकार

शुभ दीपावली
आदित्यप्रताप सिंह चौहान
प्रधान
पंचायत समिति रेलमगरा
जिला राजसमंद

दीपोत्सव
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
समन्द्र मार्बल प्रा.लि., निर्झरना

किश्त

पचास हजार की नौकरी फिर भी महीने के आखिरी दिनों में बेबस, लाचार फिरता रहता है वो, कभी इससे उधार मांगता तो कभी उससे उधार, ऐसा नहीं की उसके परिवार में लोग ज्यादा है, लोग तो बस तीन ही है, लेकिन माजरा क्या है, यह समझ नहीं आता। घर का किराया भी नहीं देना पड़ता, क्योंकि पिताजी ने पुश्तैनी मकान में उसका हिस्सा जो दे दिया था। हम ऐसा ही कुछ किसी के बारे में सुनते हैं, तो बड़े ही सहज भाव से प्रतिक्रिया करने लग जाते हैं, लेकिन आज हर दूसरे व्यक्ति का हाल यही है। कर्ज के बोझ में हर दूसरा व्यक्ति दबा हुआ नजर आता है, कारण जानने का प्रयास किया, तो कुछ ऐसे कारण नजर आए,जो वास्तव में जिंदगी को आगे ले जाने की बजाएं, पीछे धकेलते हुए नजर आए, तो शुरुआत करते हैं जानने की।

घर का माहौल बहुत ही खुशनुमा, सब कुछ अच्छा सा, सवेरे सवेरे न्यूज़ पेपर पढ़ते हुए एक गुलाबी कलर का टेंम्पलेट हाथ में आया, पढ़कर जिज्ञासा हुई, कोई भी इलेक्ट्रॉनिक आइटम ले जाइए जीरो परसेंट ब्याज पर। गर्मी का मौसम भी था सोचा किस्तों में AC ले लेते हैं, वैसे भी ब्याज तो लग ही नहीं रहा और हर महीने तीन हजार ही तो देने हैं, एयर कंडीशन घर पर लग चुका था, अब रात और दिनAC की ठंडी ठंडी हवा में आनंद से बीतने लगे, जब बिजली का बिल आया तो माजरा कुछ समझ आया, जहां तीन हजार मैं काम हो जाता था, वहां नौ हजार का बिल देखकर AC चलते हुए भी माथे पर पसीना आया।

जीवन की गाड़ी चल रही थी, घर में अल्टो कार सबको हर जगह ले जा रही थी, एक इस्तहार पढ़कर मन में कुछ लालच जागा, अपनी पुरानी कार के बदले नई कार ले जाइए आसान किस्तों में, हम भी पहुंच गए अपनी पुरानी कार को लेकर कार के शो रूम में, वहां पर पहुंचते ही हमारा स्वागत हुआ और एक मॉडल जैसी नवयुवती ने हमें बैठने के लिए कहा और हमें बहुत ही प्यार से नई कार के बारे में समझाया। हम उसके झांसे में आ गए और अपनी पुरानी कार औने पौने दामों में वही छोड़ कर नई कार लेकर आ गए, नई कार के साथ हमारी घरवाली के भी कुछ पर आ गए, दस दिन बधाई का दौर चला और हम भी धीरे-धीरे उस माहौल से उकता गए। इस बीच महीने की पहली तारीख भी आ गई, अपने खाते में उस रोज हमारी सैलरी भी आ गई, दूसरे दिन एक मैसेज आया प्रिय ग्राहक आपके खाते से कार की किस्त पन्द्रह हजार जमा हो गई है इसके लिए धन्यवाद, पढ़ कर मैसेज माथे पर पसीना आया। मैं कहता भी किस्से मैं खुद ही उसमें फंसकर जो आया, अब मैं हिसाब लगा रहा हूं नौ हजार लाइट का बिल, तीन हजार एयर कंडीशन की किस्त, पन्द्रह हजार कार की किस्त, पाच हजार बच्चे के स्कूल की फीस, पाच हजार का राशन, तीन हजार जीवन बीमा की किस्त, एक हजार मोबाइल का रिचार्ज, पाच हजार कार और बाइक का पेट्रोल, तीन हजार बाहर खाने का खर्च, अब बचा सिर्फ एक हजार और महीने के 27 दिन, अब कुछ समझ नहीं आ रहा, कैसे निकलेगा महीना यही डर सता रहा ... आज की लाइफ स्टाइल में यह सब कुछ आम बात है, इसलिए व्यक्ति आज मानसिक रोगी होता जा रहा है, चमक दमक की आभासी दुनिया में खुद ही धोखा खा रहा है, इसीलिए दिखावे पर मत जाइए, थोड़ी अपनी अक्ल लगाइए, पैसा अगर पास है तो नगद देकर कुछ भी लाइए हो सके तो जिंदगी की गाड़ी को सही से चलाइए।

राहुल दिक्षित RD

काव्य गोष्ठी मंच

कांकरोली, राजसमंद

शुभ दीपावली
शांतिलाल कोठारी
प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य
पूर्व प्रधान
पंचायत समिति, राजसमंद

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं
नितेश अग्रवाल
कावेरी मिनकेम प्रा.लि. जेतपुरा

दीपोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं
श्रीमती ऐजीबाई सालवी
सरपंच
: ग्रामवासियों से अपील :
● बरसाती पानी व्यर्थ न बहाएं ● पानी की बूंद-बूंद बचाएं।
● शौचालय का उपयोग करें ● अधिक से अधिक पेड़ लगावें।
हरिसिंह राव
उप सरपंच
ग्राम पंचायत जेतपुरा, पंचायत समिति आमेट

दीप

हर तरफ नैराश्य के हैं,
घन घनेरे, दीप हूँ।
आशा भरा,जलता रहूँगा।

युद्ध के भीषण प्रभंजन, घेरते
जग, शांति की ज्वाला जला,
जलता रहूँगा।

भाल पर से पोंछ लो, चिंता-
लकीरें, हर्ष की ज्योति भरी,
जलता रहूँगा।

काल-रात्रि का तमस कितना
भयावह, चमचमाती आभा है,
जलता रहूँगा।

तेल से पूरित हुआ मैं
छलछलाता हूँ, महासागर
सदृश
जलता रहूँगा।

घोर तम से ना डरो, आओ
यहाँ तुम, जल रहा मैं,
अनवरत जलता रहूँगा।

दीप हूँ मैं, कार्य जलना जानता
हूँ, जल रहा था,जल रहा हूं,
जलता रहूँगा।

आ गयी दीपावली, मैं बहुत
हर्षित हर निकेतन में जला,
जलता रहूँगा।

कृष्णकांत
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

सोन पपड़ी बिन सब सून

घूरे के दिन फिरते हैं। फिर वह तो सोन पपड़ी है। दिवाली पर अगर किसी की सबसे ज्यादा चर्चा होती है तो वह मुई सोनपपड़ी है। यह दीगर बात है कि उसकी उपेक्षा हर कोई करता है, लेकिन भेंट में वही देना चाहता है। मैनपुरी की तंबाकू मशहूर है, वैसे ही लाला जी की सोनपपड़ी का डंका पूरे इलाके में बजता है। सुबह सोनपपड़ी की बिक्री से शुरू होती है और शाम तक केवल सोनपपड़ी ही बिकती है। जो भी आता है और एक पीस चखना कर्तव्य समझता है। चखने के बाद-भैया एक किलो हमाय लें भी तौल दियो।

दिवाली अधिकार अमीर की बपौती नहीं है। गरीब बम नहीं चला सकता तो क्या फुलझड़ी की रोशनी में अपना घर तो देख सकता है। बिजली की रोशनी के लिए मोहताज हो, लेकिन फुलझड़ी की रोशनी में अंधकारमय भविष्य को उज्ज्वल होते देखने का अधिकार उसके पास है। सरकारे आतीं हैं और चली जाती है, लेकिन दिवाली हर साल नियम से आती है। कभी नये कपड़े लेकर आती है, तो कभी पुराने जूतों पर सरसों के तेल से काम चला लिया जाता है। अगर बनियान नई है तो पुरानी शर्ट की आवश्यकता नहीं पड़ती और शर्ट नई है तो बनियान छोटे भाई के लिए हो जाती है।

फुलझड़ी की रोशनी में लटके मुंह पर प्रसन्नता की लालिमा कुछ देर के लिए दौड़ जाती है। अनार खाने और चलाने की भले ही औकात न हो, लेकिन अनार की रोशनी में गरीबी साफ और सुन्दर दिखाई देती है। दिवाली रोशनी का त्योहार है, गरीबी का त्योहार है, दिवाली अमीर-गरीब का भेद करती है। मनाने का अधिकार सभी को है। नेकी की दीवार पर गरीबी दिखाई देती है तो नेकी से कितनों की दिवाली आर-पार हो जाती है। दिवाली पर नेकी की दीवार मेले की भीड़ की तरह हो जाती है। जिन्हें उतार दिया जाता है, उन्हें दीवार से उठा कर खुशी-खुशी पहनकर अपनी भावनाओं का इजहार करने दूसरे के अनार की रोशनी में अपने खिले-खिले चेहरे देखने के लिए निकल पड़ते हैं।

दिवाली पर मिठाई की अभिलाषा भला किस शख्स में नहीं होती, उन्हें छोडिए जो छोड़ भलाई सर्वगुण सम्पन्न हैं, उन्हें तो दिवाली पर होली का नशा चढ़ा रहता है। ठेके कभी वीरान नहीं होते। सरकार भले ही ''नो मेन लैंड'' की तरह रोक लगा दे, लेकिन स्टॉक करने पर कोई रोक नहीं होती। पूजा हो जाए उसके बाद मिठाई और चखना एक साथ आ जाते हैं। दिवाली पर व्यापार करो, धन अर्जित करो और यश कमाओ। केवल धन अर्जित करना उद्देश्य नहीं होता? उसे यश में बदलने की कला आनी चाहिए। जो इस कला में पारंगत हैं, वे जानते हैं किसे कौनसी मिठाई से खुश किया जाना है। कौन सी मिठाई देने से वाहवाही का ताज सर चढ़कर बोलने लगता है। गुलाब जामुन और दही भल्ले होली को समर्पित है तो मावे (खोया) की मिठाई के बीच सोन पपड़ी की अपनी धाक है।

सोन पपड़ी गरीबों की मिठाई मानी जाने लगी है। एक जमाना था, जब सोनपपड़ी का बाजार, शेयर मार्केट में सबसे ऊंचा हुआ करता था, लेकिन जब से काली मिठाई प्लास्टिक के वेपर में आने लगी है, सोन पपड़ी हेय समझी जाने लगी है। कुछ मीठा हो जाए उनके लिए जो मिठाई खा के अस्पताल जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। जिन्हें भरपेट मीठा खाना है उन्हें मैंनपुरी की सोनपपड़ी कम से कम आधा किलो उदरस्थ करने के लिए चाहिए।

एक ओर सोनपप़ड़ी खाने के लिए नहीं, देने के काम आती है, वहीं दूसरी ओर सोनपपड़ी बड़े चाव से निपटाई जाती है। ड्रायफ्रूट्स तो चोचले बाजी है। पचास ग्राम बादाम अगर एक बार में खा लिए तो दस्त लग जाएंगे, वहीं जहां सोनपपड़ी मजे से खाई जाती है, वे तो ढाई सौ ग्राम बादाम पचाकर डकार न लें। जहां दांत हैं वहां चने नहीं, जहां चने हैं वहां दांत नहीं। चाहे कितनी ही उपेक्षा भाव से सोन पपड़ी का तिरस्कार किया जाए, लेकिन दिवाली उसके बिना अधूरी है। एक बार नये कपड़े और जूते भले ही ना हो, लेकिन दिवाली पर सोनपपड़ी घर में आनी ही है। सोनपपड़ी जमीन से जुड़ी मिठाई है। वह नेकी दीवार से लेकर साहब की कोठी तक पाई जाती है। दिवाली पर हलवाई की दुकान पर जलेबी मिले या न मिले, लेकिन सोनपपड़ी जरूर मिलेगी। यह अलग बात है कि कोई खाता है तो कोई बांटकर अपना बोझ हल्का करता है।

सुनील जैन राही
वरिष्ठ व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 9810 960 285

दीपोत्सव
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

सुरेन्द्रसिंह राठौड़
विधायक
विधानसभा कुंभलगढ़

अणछी देवी गुर्जर
प्रधान
पंचायत समिति आमेट

हजारीलाल गुर्जर
जिलाध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

अभिनन्दन मिनरल्स, जेतपुरा, जिला-राजसमंद

अकेली लड़की मौका नहीं, जिम्मेदारी है

शुक्रवार रात लगभग 11:30 बजे मैं थाने से बाइक पर घर लौट रहा था, तभी मैंने देखा कि एक लड़की सलवार सूट पहने सड़क पर मदद के लिए इशारा कर रही थी। मैंने बाइक रोकी, लेकिन एक ऑटो हमारे पास से निकल गया। मैंने कहा, 'जी कहिए...' वह गुस्से में बोली, 'मैंने ऑटो को रुकने का इशारा किया था, इतनी देर में ऑटो आया था और आपकी वजह से वह भी चला गया।" मुझे भी बुरा लगा, सोचा कि इतनी रात को अकेली लड़की मेरी गलती की वजह से परेशान हो गई। मैंने तुरंत माफी मांगी और लिफ्ट के लिए पूछा, लेकिन उसने साफ मना कर दिया। मैंने फिर कहा, 'रात काफी हो चुकी है और आप अकेली हैं।" मगर वह गुस्से में थी और कुछ सुनने को तैयार नहीं थी। मैंने सोचा कि चला जाऊं, लेकिन फिर मन में आया कि अगर कुछ गलत हो गया तो मुझे इसका दोषी माना जाएगा। मैंने कहा, 'ठीक है, जब तक आपको ऑटो नहीं मिलता, मैं यहीं खड़ा रहूंगा क्योंकि गलती मेरी है।" वह कुछ नहीं बोली। आधा घंटा और बीत गया, अब समय रात के 12 बजे के पार हो गया। मैंने फिर से लिफ्ट देने की पेशकश की और कहा, 'अब तक आधा सफर तय कर लिया होता, यहाँ खड़े रहने से कोई फायदा नहीं है।' लेकिन उसने अनसुना कर दिया। मैं उलझन में था, उसे अकेले छोड़ने का मन नहीं कर रहा था। मेरे मन में बेचैनी थी कि कहीं कुछ गलत न हो जाए। फिर सोचा, 'जब मेरे मन में इतनी घबराहट है, तो वह तो एक लड़की है और मैं उसके लिए अजनबी हूँ, कैसे मुझ पर विश्वास करेगी?'

अचानक मुझे एक उपाय सूझा। मैंने कहा, 'देखो, मेरे घर में भी तुम्हारे जैसी एक छोटी बहन है और पत्नी भी तुम भी वैसी ही मेरी छोटी बहन हो। मेरी मानो, यहाँ इतनी रात को अकेले रहना ठीक नहीं है। प्लीज मेरे साथ बाइक पर चलो, जहां तक तुम्हें अच्छा लगे।" मेरे इन शब्दों से वह थोड़ी राहत महसूस करने लगी और बोली, 'आप जाइए, मैं कोई न कोई उपाय कर लूंगी।' मैंने कहा, 'मुझे यहाँ रुके एक घंटा हो गया है। ऑटो तो दूर, आदमी भी नजर नहीं आ रहा। प्लीज चलो।" वह फिर भी तैयार नहीं हुई। मैंने अपना पर्स खोला और उसे दिखाया, 'देखो, इसमें मेरी फोटो है, पहचान पत्र है, ड्राइविंग लाइसेंस और आधार कार्ड है। इसे अपने पास रख लो, जब सुरक्षित जगह पहुँच जाओ तो लौटा देना।" उसने मेरा आधार कार्ड देखा और कहा, 'अजीत सर आप मैंने कहा, 'हां, मेरा नाम अजीत है। देखो, अब प्लीज मना मत करना। तुम्हारे घर में तुम्हारे माता-पिता, भाई-बहन इंतजार कर रहे होंगे। वैसे मेरे भी मम्मी-पापा बहन और पत्नी इंतजार कर रहे हैं, चलो।" वह थोड़ी सी मुस्कुराई और बाइक पर बैठ गई। मैंने पूछा, 'तुम्हारा घर कहाँ है?' वह बोली, 'आप चलते रहो, जहां लगेगा बता दूंगी।" लगभग 40 किलोमीटर के बाद वह बोली, 'बस, यहीं रोक दो।' और तुरंत एक सड़क से कॉलोनी की ओर जाने वाले रास्ते पर दौड़ पड़ी। कुछ ही मिनटों में वह मेरी आँखों से ओझल हो गई। घर पहुंचा तो तीन बज चुके थे। पापा बहुत गुस्से में थे, मम्मी और बहन भी जाग रहे थे। यकीनन वे चिंतित थे और गुस्सा भी। बिना कुछ बताए मैं चुपचाप अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन रविवार था, सो आराम से सो रहा था। अचानक ग्यारह बजे पत्नी ने आकर झकझोरा, उठो कोई लड़की आई है, उसके मम्मी-पापा भी हैं। क्या कोई लफड़ा कर दिया है क्या?' और हंसने लगी, 'पापा बुला रहे हैं नीचे, जल्दी चलो।' मैंने कहा, 'पागल है, मैं और लफड़ा? शैतान कहीं की।" अचकचाई नींद में तुरंत बनियान पहनकर नीचे आया। देखा तो वही रात वाली लड़की और उसके साथ एक अंकल-आंटी थे। यह देखकर मैं हैरान रह गया। मैं कुछ पूछता, उससे पहले वह उठकर आई और बोली, 'भैया, हैरान हो गए ना, मैं यहाँ कैसे आई? आपका पर्स जिसमें आपका पैन कार्ड, आधार कार्ड है, उसी से पता लेकर मम्मी-पापा के साथ आई हूँ। आपने रात में मेरी इतनी मदद की और मैंने आपको धन्यवाद तक नहीं कहा। उल्टा आपके जरूरी दस्तावेज भी ले गई। पहले थैंक्यू, फिर सॉरी। जैसे आपने कहा था, मैं भी आपकी छोटी बहन जैसी हूँ।" इसके बाद उसके मम्मी-पापा ने मुझे ढेरों आशीर्वाद दिए और मेरी काफी तारीफ की। फिर अपने यहां आने का निमंत्रण देकर वे लोग चले गए। उनके जाते ही पापा ने मुझे सीने से लगा लिया और कहा, 'मुझे गर्व है तुझ पर अजीत, तूने एक अच्छे बेटे वाली बात की। मगर रात को ही बता देता तो अच्छा होता, बेकार में तुझे डांटा मैंने।" मैंने कहा, 'पापा, आप भी तो मेरी भलाई के लिए ही चिंतित थे।' पापा ने एक बार फिर से मुझे सीने से लगा लिया और इस बार मम्मी और छोटी बहन भी आकर मुझसे लिपट गईं। दोस्तो, मुझे मेरे पापा ने बचपन से लेकर आज तक एक बात ही सिखाई है, 'अकेली लड़की मौका नहीं, जिम्मेदारी होती है हमारी।"

अजीत गुर्जर
दौसा

दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
खुमाणसिंह बल्ला
करणसिंह बल्ला
इन्द्रसिंह बल्ला
ठि. थोरिया, गजपुर
पूजा मार्बल
वनी, सापोल, तहसील व जिला राजसमंद

दीपोत्सव पर जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं
गोवर्धनलाल राठौड़
महेश मिनरल्स
एमएम मिनरल्स
बामन टुंकड़ा, तहसील व जिला राजसमंद

HAPPY
DIWALI
पीरु खींची
Happy
Diwali
जिला उपाध्यक्ष युवा कांग्रेस राजसमंद
जिलाध्यक्ष डॉ अंबेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसाइटी राजसमंद

Happy
Diwali
शुभ दीपावली
डॉ. राम मीणा
विधायक प्रत्याशी व वरिष्ठ नेता
भारत आदिवासी पार्टी, कुंभलगढ़, जिला राजसमंद

माना कि अंधेरा घना है

स्कूल का सूना परिसर, चारों ओर विकट सन्नाटा सा पसरा हुआ। बच्चों की चिल्लपों को शुरू होने में कोई एक घण्टा बाकी। दूर गाँव से स्कूल के दरवाजे के बाहर होकर खेत- खलिहान में जाने वाले रास्ते बैलगाड़ियों की चरमर्-चरमर् से आन्दोलित होना शुरू हो चुके थे। स्कूल के गेट पर ताला मानों बाहर की तमाम वर्जनाओं से स्कूल को मुक्त रखने को संकल्पबद्ध सा लग रहा था। लग रहा था, मानों एक सुनसान झुटपुटी सुबह अनेक 'दीपमालाओं' का इन्तजार कर रही थी।

अचानक स्कूल के सबसे अधिक बुजुर्ग केशर बा ने द्वार को मुक्त कर दिया। किलकारी भरते बच्चों का झुण्ड दौड़ता भागता विद्यालय के अन्दर जाता नजर आने लगा। स्कूल की घण्टी खुशी के मारे घनघना उठी मानों पिछली शाम से आज की सुबह के बीच का दर्द खुशी का सैलाब बनकर फूट पड़ा हो। वह एक दीपक, जो अब तक रात के अंधेरे में टिमटिमा रहा था, अब दीपमालाओं के प्रकाश से मानों झूम उठा। स्कूल की घण्टी लहरा-लहरा कर बज उठी। वर्षों से स्कूल के सन्नाटे को तोड़ने का काम घण्टी का ही तो है। गुरुजन का गुरु-समय का एहसास दिलाने का गुरूत्तर दायित्व हो, बस्ते की बन्द किताबों को एक-एक कर खुलवाने की कवायद हो अथवा बच्चों को मध्याह्न भोजन करने की याद दिलाने वाला पुण्य कार्य हो, घण्टी के सिवाय भला कौन करे ? हाँ, घण्टी जानती है, इसके भीतर का प्रकाश जो इन नन्हें दीपकों को झिलमिल किलमिल प्रकाशित करता है।

सोचने लगी, यदि मैं न कहूँ तो इन सबकी क्या हालत हो? घण्टी की कल्पना में समय का अनुसंधान ही न करवाने वाली हास्यास्पद स्थितियां मानों मुँह चिढ़ाते हुए आ खड़ी हुईं। बस्ते में बन्द, बाहर निकल पाने को अकुलाती किताबें और उन पर अंकित विषय छटपटाते हुए अपनी बारी आने के संभ्रम में मानों सिर पटकने लगे। गुरुजी स्टाफ रूम से बाहर निकल कक्षाओं में पहुँचने की पाबन्दी से मुक्त आनन्द मग्न दिखाई देने लगे और हेडमास्टर सा. के चेहरे की शिकन इस हड़बड़ाहट को देख और भी गहरी होने लगीं। लगा, प्रकाश उल्लास उमंग का वाहक है और उल्लास कर्म कौशल का प्रबोधक है।

घण्टी को लगा - वाह! सही मायने में तो वही स्कूल की हेडमास्टर है। क्यों न हो, यह काला-कलूटा 'श्यामपट्ट', यह खूसट 'घड़ी', यह 'गोल-बेडोल पानी का मटका', यह दुबली पतली 'चॉक स्टिक' और यह मास्टरजी के हाथ की 'छड़ी' और ऊपर से यह पिद्दा-सा 'डस्टर', सब हों, लेकिन मैं न हूँ तो भला किस काम के। ये सब तो (सच कहूँ।), संवेदनहीन हैं-मैं न हूँ, बच्चे न हों- दीप और दीपमालाएँ न हों तो यह चहचहाता चिड़ियाघर वीरान रेगिस्तान सा लगता है। यों भी श्यामपट्ट तो किसी काम का न रहा। नए गुरुजी ने तो इस पर हाथ लगाना ही छोड़ दिया। अब बेचारा डस्टर करे तो क्या करे, किस पर अपना हाथ साफ करे ? और घड़ी उसकी सांस तो मेरे में ही अटकी है, दोनों कांटें कब के रुक गए हैं, कौन चालू कराए ? वह तो भला हो केशर बा का, जिनके हाथ की घड़ी मुझे बजाती है? उसका सहारा न हो तो तौबा-तौबा। यह मटका दिन में कितनी बार नन्हें हाथों के द्वारा पनघट पर लाया ले जाया जाता है, थककर चूर-चूर हो जाता है, अब भला उससे क्या उम्मीद की जाए , ये ही किसी काम के नहीं तो छोटी-सी चॉकस्टिक जिसका काम बोर्ड पर कम, बिखरकर कमरे में कचरा फैलाना ही रह गया है, से क्या उम्मीद की जाए? केशर बा तो मुझ दीपक की तेल-बाती है।

घण्टी के आत्म आह्लाद पर जैसे बिजली गिरी। हथौड़े की एक झन्नाटेदार चोट ने घण्टी की रुह कंपा दी। वह रो पड़ी, लगा कि कोई उसे प्यार नहीं करता, वह सबकी सेवा करती है, स्कूल की असली हेडमास्टर है, लेकिन इसके बावजूद उसे मिला क्या ? हर आधे घण्टे में हथौड़े की मार। वह खुद से खुद रो पड़ी। प्रकाश और अंधकार के बीच का यह द्वन्द। उफ् ! यह 'कहानी है दीये की और तूफान की।'

घण्टी का दर्द और उसकी आत्मानन्द। दोनों के बीच उलझा उसका अस्तित्व बोध। मुझे लगा, सिस्टम में यह विडम्बना निर्जीव मानी जाने वाली घण्टी की ही नहीं है, सजीव इंसान की भी है। श्रेष्ठता की खोज में निरत एक छोटा लेकिन ऊर्जा में उतना ही बड़ा शिक्षक वर्ग समर्पण की कठिन धार में चलता हुआ अपने लक्ष्य समूह विद्यार्थी को शिक्षा व विद्या का प्रकाश विकिरित कर रहा है, लेकिन उसके इस आत्म आह्लाद पर चोट तब पड़ती है जब उसकी शैक्षिक स्वायत्तता को आरोपित व्यवस्था में प्रतिबद्ध किया जाता है।

इन पंक्तियों के लेखक को लगता है, यह प्रतिबद्धता तब टूटेगी जब टाइम टेबल उसकी सुविधा के लिए होगा। वह टाइम टेबल की सुविधा के लिए नहीं। यह स्वायत्तता तब अपनी पूर्ण ऊर्जा के साथ परिवर्तन की हवा को सामने लाएगी, जब घण्टी की सीमा में शिक्षक की बौद्धिकता को खण्डित नहीं किया जाएगा अथक ज्ञान के संप्रेषण का सतत् प्रवाह विद्यार्थियों के आनन्दयुक्त अवगाहन का हेतु बनेगा। शिक्षा क्रम और शिक्षण प्रक्रिया में निरर्थक प्रतिबन्ध ग्रहण की तरह कभी-कभी घण्टी को ग्रसते हुए लगते हैं। यह स्वायत्तता तब अपने ओज के साथ विद्यालयों को जीवित मानव के रूप में स्थापित करेगी, जब विद्यार्थियों व शिक्षकों के बीच टेबल की लक्ष्मण-रेखा न रहेगी, तब जबकि विद्यालयों में हेडमास्टर रूम शिक्षण-अधिगम कक्ष का रूप ले लेंगे और विद्यार्थियों के लिए हेडमास्टर पितृतुल्य हो जाएंगे। परम्पराओं से पृथक् ये स्कूल तब घण्टी के स्वर में भी माधुर्य का एहसास करेंगे और शायद तब स्कूल के बरामदों में पसरा सन्नाटा बाल-गोपालों की उन्मुक्त हँसी से रोशन हो उठेगा। घण्टी का दीपक, बच्चों की दीपमालाएँ तब दीपोत्सव के प्रकाश में नहा उठेंगी। मुझे आने वाली सुबह के उस स्कूल की अनन्त प्रतीक्षा है। स्कूल की घण्टी उस प्रतीक्षा में आँखें बिछाये अब भी 'दीपमालाओं' का मेला रोज लगाती है, क्योंकि वह जानती है- माना कि अंधेरा घना है, पर एक दीया जलाना कहाँ मना है ?

डॉ. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

शिक्षक मोहनसिंह गौरवा के जीवन संघर्ष की रोचक व प्रेरक कहानी

कांकरोली की इस पावन प्रभु द्वारकाधीश की नगरी की यह विशेषता रही है कि उसने कईं क्षेत्रों में उत्कृष्ट व्यक्तियों को जन्म दिया। जिन्होने यहां की माटी के अनुरूप ही कई अच्छे-अच्छे कार्य कर अपना और अपने परिवार को गौरवान्वित कर आने वाली पीढियों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। अब तक लगभग 73 ऐसे ही कांकरोली के आदर्श स्व. महापुरूषों के बारे में पढ चुके हैं। आज हम 74वें आदर्श के रूप में स्व. मोहन सिंह गौरवा के बारे में आपको बताने जा रहे हैं।

कांकरोली में राजसमन्द की पाल पर स्व. चतर सिंह जी गौरवा के यहां लगभग 100 साल पहले दिनांक 21.03.1924 को माता श्री जशोदा देवी की कोख से एक ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी बच्चे का जन्म हुआ जिसके माता व पिता दोनो ने ही बडे चाव से उनका नाम मोहन सिंह गौरवा रखा। जब वे कांकरोली की इस पावन माटी में खेलकूद कर बड़े हुए तो आपने अपनी प्रारंभिक प्राथमिक शिक्षा प्रारंभ की। किशोरावस्था में आगे की पढाई हेतु बीकानेर पढने चले गये और जब शिक्षा पूर्ण हुई तो पुनः कांकरोली आ गए।

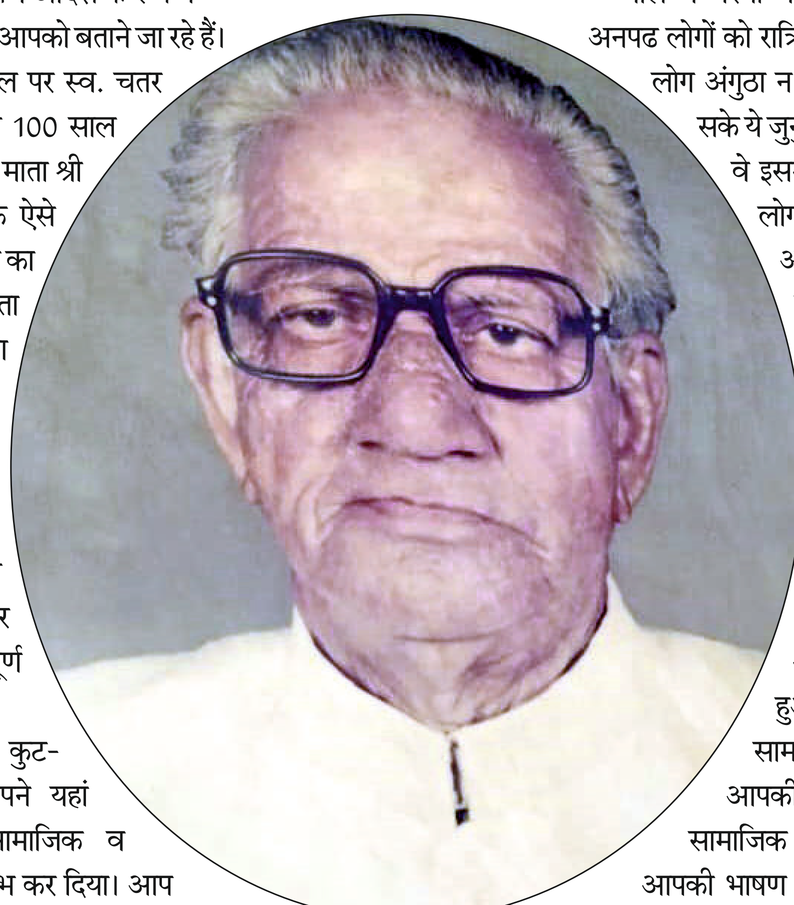

आपमें समाज सेवा का जज्बा कुट-कुट कर भरा हुआ था आपने यहां कांकरोली आते ही कई सामाजिक व समाजसेवा का कार्य करना प्रारंभ कर दिया। आप गांधीजी से काफी प्रभावित थे। अतः अंग्रेज हुकुमत के खिलाफ आजादी की लडाई में भी आपने लोगों को जागृत करने का कार्य किया। छुआछुत मिटाने के मिशन में भी आप कार्य करने लगे। और लोगों में देश भक्ति का जज्बा पैदा करने लगे । यथा समय कांकरोली में ही आपका विवाह स्व. भगवती देवी से हुआ और वे गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर गए। अब उन पर कुछ कामकाज कर गृहस्थी चलाने का बोझ पडा तो आपने अध्यापिकिय कार्य को अंगीकार करते हुए बच्चों को पढाने का कार्य प्रारंभ कर दिया। जब देश आजाद हुआ तो आप राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग में अध्यापक के पद पर नौकरी करने लगे। पर आपने तो समाजसेवा और सामाजिक सेवा का भाव भरा हुआ था। अतः अध्यापक की नौकरी के साथ-साथ वे रात्रि को प्रोढ शिक्षा का कार्य भी करने लगे। भील व बैरवा बस्ती हरीजन और अन्य कई ऐसे अनपढ लोगों को रात्रि में पढाने का कार्य भी करने लगे। लोग अंगुठा न लगाकर अपने हस्ताक्षर खुद कर सके ये जुनुन उन पर सवार था। कई मायनों में वे इसमें सफल भी हुए । शिक्षा के प्रति लोगों में जागृति लाने का कार्य भी आपने किया। राज्य सरकार के समाज कल्याण विभाग के कईं प्रोजेक्ट में आपने कार्य किया। वे संस्कार केन्द्र भी चलाया करते थे। जिसमें महिलाओं को सिलाई कला, कसीदा कला, पाक कला, और स्वच्छता का अध्ययन कराया जाता था। मनोरंजन के साथ-साथ अच्छे-अच्छे उपदेशों के कार्यक्रम भी हुआ करते थे। अतः इतने अधिक सामाजिक कार्यों के कारण लोगों में आपकी छवि एक जिम्मेदार और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में बन गई थी। आपकी भाषण शैली और लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के गुणों के कारण ही आप राजसमन्द क्षेत्र के शिक्षक नेता के रूप मं कार्य करने लगे। सन् 1965 से लगाकर सन् 1990 के दशक तक आप राजसमन्द शिक्षक नेता के रूप में एक जाने-पहचाने चेहरे रहे। सन् 1971 की शिक्षकों की हडताल में आप सक्रिय भूमिका के रूप में रहे। राज्य स्तर तक आपकी तुती बोलती थी। राजस्थान के शिक्षक नेता स्व. श्री बिशन सिंह शेखावत भी आपके कार्य से बडे

प्रभावित थे। अक्सर वे राय मष्वरा हेतु जयपुर जाया करते तो कभी बिशन सिंह जी खुद कांकरोली आ इनसे मिला करते थे। सन् 1971 की शिक्षक हडताल में जिसमें राजसमन्द शिक्षक संघ के अध्यक्ष के रूप में संजिदा व लगन से कार्य करने वाले श्री शांतिलाल जी हिंगड़ जो उस समय आंदोलन में संघर्ष समिति के अध्यक्ष थे वहीं मंत्री स्व. श्री मोहन सिंह जी गौरवा व कोषाध्यक्ष पर सेल टेक्स डिपार्टमेन्ट में कार्यरत श्री महावीर प्रसाद जी जैन थे। इन तीनों के पुलिस वारण्ट थे और उस दरमियान उन्होने भूमिगत रहते हुए बडी दक्षता के साथ हडताल का सफल संचालन किया था।

सन् 1980 में आपने बहुत बडा रामायण पाठ करने का बीडा उठाया और उसके आयोजन की तैयारी में लग गये। आयोजन के पांडाल और खाने पीने के साधन हेतु पैसों की आवश्यकता पडी तो आपने विश्वसनीय साथियों के सामने अपने मकान को गिरवी रख पैसों के इंतजाम का प्रस्ताव रख दिया। इस पर उनके विश्वसनीय श्री महावीर प्रसाद जी जैन ने उनको ऐसा करने से रोका और पैसों का इंतजात हो जाने का आश्वासन दिया। आयोजन को सुचारू रूप से समपन्न कराने की श्री महावीर जी ने अपने प्रयासों से चन्दे के रूप में पैसा इकट्ठा कर कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप जब सेवा से निवृत हो गये तो फिर सामाजिक कार्यों में सलग्न हो गए। कांकरोली जलचक्की पर चैमुखा महादेव मंदिर एक छोटी सी पहाडी मंगरी पर एक छोटी सी छतरीनुमा महादेव जी की मंण्डी के रूप में था। उस मन्दिर के पास बहुत सारी आस-पास जमीने थी। जिसपर भूमाफियाओं और जालसाजों की लोलुप नजरें इस पर टीकी हुई थी पर आपने ऐसे लोगों के ईरादों को अपनी उत्तम छवि और कार्य करने के तरीकों से सफल नहीं होने दिया। आपकी निष्पक्षता और ईमानदारी से प्रभावित हो लोगों ने आपको चौमुखा महादेव मन्दिर कमेटी का अध्यक्ष बना दिया। उसका परिणाम भी कुछ ही सालों में लोगों के सामने आ गया। मन्दिर की जमीनों से उचित तरीके से धनोपार्जन होने लगा। मन्दिर निर्माण का कार्य गति पकडने लगा। धीरे-धीरे कार्य बढता चला गया और आज चौमुखा महादेव का मन्दिर भव्यता लिये हुए है, जिन्होने आज से 50-60 वर्ष पूर्व इस मन्दिर को देखा हो और आज देखे तो उस व्यक्ति का आश्चर्य सातवे आसमान पर नजर आएगा। इसी तरह समाज सेवा करते-करते दिनांक 29.06.2004 को वे परलोक सिधार गए। अपने पीछे भरा-पूरा परिवार जिसमें स्व. रमेश जी, श्री महेश जी, श्री दिनेशजी, जो वर्तमान में चैमुखा महादेव मन्दिर के अध्यक्ष पद का कार्य संभाल रहे हैं। श्री उमेश जी व श्री मनोज जी की पुत्र व तीन पुत्रियां श्रीमती मधु, श्रीमती गिरजा, श्रीमती छाया को छोडकर वे ईश्वर को प्यारे हो गये। ऐसे शिक्षक नेता और समाजसेवी मेरे गांव कांकरोली के स्व. श्री मोहन सिंह जी गौरवा को शत्-शत् नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

एक विचार यात्रा श्रीनाथद्वारा की

कांकरोली से रवाना होकर नाथद्वारा पहुंचे मेरे जैसे भगवद्भक्त दर्शनार्थी को श्रीकृष्ण चरणारविन्द उन्मुख होने में जिस मानसिक प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा, वह मेरे लिए विशेष पीड़ानुभूति का विषय इसलिये रहा क्योंकि मैं संभावित सुविधा भोगी हो सकने की योग्यता रखने का दम भरने वाला दर्शनार्थी था। अपने शुद्ध पुष्टि भक्त होने के दर्प के खंड- खंड होने की यह कहानी अंततःअपने लिये नहीं,सामान्य दर्शनार्थी की आपबीती हो सकती है। वहीं सबसे बड़ी वितृष्णा जो एक सामान्य से लेकर विशिष्ट नागरिक तक के तीर्थ में प्रवेश से प्रारंभ होकर प्रत्यक्ष परोक्ष कितना निराश करती है, इसे मैंने गहराई के साथ अनुभव किया है।

मैंने अपने बुजुर्गों से सुना था कि यहां मुझ जैसे अनेक श्रीमद्वल्लभवंशानुयायी तैलंग परिवारों को दर्शन के लिये विशेषाधिकार प्राप्त थे। कीर्तनियां कक्ष से भगवद्छवि को आंखों में भर लेने और विशेष समाधान के वे सपने तो हवा हुए। आज की पीढ़ी को उसकी दरकार भी नहीं लेकिन एक सामान्य भक्त के उस तनाव की कल्पना कीजिये जो श्रीनाथजी मंदिर के परिसर के बाहर आसपास पहुंचते ही संभ्रम में आ जाता है कि उसे, उसके साथ आये बच्चों और पैदल चल पाने में असमर्थ बुजुर्गों को दर्शन होंगे या नहीं? यह मैंने अनुभव किया, ऑटो या कार से नाथद्वारा शहर की असुविधा सम्पन्न गाय गोधों और लोगों की भीड़ से अटी गलियों में पार्किंग की तलाश में भटकते दर्शनार्थियों के परेशान चेहरों को देखकर। सड़कों के किनारे अधिकृत अनधिकृत पार्किंग को बमुश्किल हथियाने के बाद सफर शुरू हुआ मंदिर के मुख्य द्वार तक का। जगह-जगह दर्शन से पहले या बाद में चाय, ठंडे, फाफड़े, नमकीन, भेल की बरसों पुरानी बड़ी छोटी दुकानों पर की ठसाठस खड़ी चटखारे लेती जीभ के स्वाद को एवोइड न कर पा सकने वाली चटोरियों की भीड़ को देखकर समझ नहीं पाया कि इन सबकी वरीयताएं क्या हैं, दर्शन या फाफड़े, भेलपुरी? पीछे से आते हुए भीड़ के रेले से छलकती चाय के कुल्हड़ों को देखते मैं पहुंच गया था श्रीनाथजी मंदिर के मुख्य द्वार पर। द्वार के बाहर मंदिर के भोग की प्रामाणिक दुकानों पर प्रसाद खरीदते भाव प्रवण भक्तों को देखकर यह तय कर पाना मुश्किल सा था कि प्रसाद क्रय करने की ये प्रामाणिक दुकानें हैं तो वह क्या जो मन्दिर के अंदर न्यौछावर जमाकर दिया जा रहा है? अलबत्ता, यहां फिर बासौंदी की कुलियों को खाली करते जा रही भोग प्रिय भक्तों की भावना को देख अवश्य ही अभिभूत हो गया।

भीड़ भरी गलीनुमा पथरीली सड़कों पर चौपाटी के भी पहले आटो स्टेंड से शुरू हो मंदिर के बाहर, अगल बगल दोनों ओर दुकानों की स्थायी - अस्थाई थड़ियां, शोपिंग में व्यस्त, अनुरक्त स्त्रियों के झुंड और इस भीड़ के जंगलों के बीच दौड़ रहे टू व्हीलर्स। फिर गंदगी से अटा बाजार, लंबे समय से निर्मित हो रही बिल्डिंगों के खत्म न होने की अवधि को मुंह चिढ़ाती धूल, मिट्टी से अटी बाजार की गलियों की हालत देख लगता ही नहीं था कि यह जग प्रसिद्ध श्रीनाथजी तीर्थ है, लेकिन शायद भगवदनुग्रह प्रबल था जो मैं इस अनियंत्रित भीड़ के जंगल, जहां श्रीनाथजी के मुख्य द्वार तक तो मुझे मात्र टेंपो और कारों को बिना रुके सवारियों को उतार आगे बढ़ जाने का कड़क आदेश देने वाले पुलिस कर्मियों के सिवाय आगे कोई संवेदनशील पुलिस कर्मी नहीं दिखाई दिया, आगे बढ़ता गया। अलबत्ता अब मंदिर परिसर में जगह-जगह सुरक्षा गार्ड महिला और पुरुषों के दल बदल व्यवस्था में तैनात दिखने पर राहत महसूस हुई।

इस सारी रेलमपेल में मुझे दर्शनार्थियों की भीड़ पर समस्त व्यवस्थाएं बौनी नज़र आने लगीं। व्यवस्थाओं के पुनर्नियोजन की दिशा में विगत वर्षों में काम न हुआ हो, ऐसा नहीं है।'खेवा' सिस्टम की परंपरा को आधार बना पंक्तिबद्ध दर्शन व्यवस्था अंततःभक्त को भगवान् के सामने ले जा खड़ी करती है,यह तो बहुत अच्छा लेकिन इस लंबी प्रक्रिया में वेटिंग हाल में कुछ बैठते,कुछ चलती भाव प्रवण दर्शनार्थियों को भारी गर्मी में दी जा रही ठंडक की व्यवस्था कुछ कूलरों और अपनी राजकीय गति से चलने वाले सीलिंग फेन के रहते बहुत पर्याप्त नहीं कही जा सकती। यदि अंदर बाहर कार्यालयों में एयर कंडीशनर हों तो इस वेटिंग हॉल में क्यों नहीं? सभी व्यवस्थाओं की जानकारी के लिए इतने बड़े मंदिर परिसर में आफ लाइन इन्क्वायरी ढूंढते-ढूंढते दर्शन ही बंद न हो जायें, यह सोच दर्शनार्थी अंततः अनोथेराइज्ड सेवादारों का सहारा लेने को मजबूर हों तो कोई आश्चर्य नहीं। अचानक भीड़ के रेले में पंक्तिबद्ध आगे चलते, मानों जोगिंग करते मैं परम भक्त दर्शनार्थी होने के आभासी आत्म गौरव का अनुभव करता, प्रभु के समक्ष था। यहां भी व्यवस्थाओं का सम्मान करते मुझे श्रीजी बाबा की एक झलक नियमानुसार और बाकी झलकें सुरक्षा गार्डों और सेवादारों की नज़रें बचाकर किए जाने के बाद बाहर निकल आने को विवश होना ही था।

जैसे येन केन प्रकारेण कभी अनियोजित तो कभी सुनियोजित दर्शन होंगे, न होंगे की ऊहापोह और तनाव, गुस्सा, निराशा की मिली जुली मनः स्थिति के बीच दर्शन लाभ कर मैंने श्रीप्रभु के श्रीचरणों में मानसिक अभिवादन किया जो मेरी अंततः आंतरिक खुशी की अभिव्यक्ति ही थी। मैं वीआईपी दर्शन की क्यों सोचूं, मैं दर्शन प्रक्रिया की राह की वैतरणी तरने के लिये गाइड का सहारा क्यों लूं, मैं विशेष होने का दंभ पाल स्वयं के प्रति गलतफहमी का शिकार क्यों बनूं? इन सबसे ऊपर मुझे तो श्रीजी बाबा की परम आनंद दायक छवि को आंखों की अंजुरि में भर भर पिलाने का मंदिर प्रबंधन द्वारा आनंदोत्सवी रोड मेप और स्थायी माड्यूल चाहिए।

अस्तु! साफ सुथरी भक्ति भावोद्वैलक 'एकम् शास्त्रम् देवकी पुत्र गीतम्' की मानस सेवा की और दौड़ती नाथद्वारा की सड़कों की कामना के साथ फिर 'दौड़ पहुंचो' के 'हेले' के आह्वान पर श्रीनाथजी के दर्शनार्थ आने को इच्छुक एक पुष्टि भक्त, मै आज के आनन्द का सदैव अभिलाषी रहूंगा। श्रीजी बाबा शीघ्र वह दिन दिखाएं -ऐसी श्री चरणों में प्रार्थना है।

डा. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं
राजेंद्र टांक (राजू भाई)
समाजसेवी, ग्राम पंचायत पसूंद- राजसमंद

HAPPY
DIWALI
हुकमसिंह कनावदा
समाजसेवी, कनावदा, जिला राजसमंद

HAPPY
Diwali
रामनारायण पालीवाल
अध्यक्ष पर्यावरण विकास संस्था
पर्यावरण विकास संस्था एवं सदस्यगण
मार्बल माइन्स ऑनर्स एसोसिएशन
एवं समस्त सदस्यगण-राजसमंद
गौरवसिंह राठौड़
अध्यक्ष मार्बल माइंस ऑनर्स एसो.

लक्ष्मी पूजन और उल्लू महात्म्य

संपूर्ण ब्रह्माण्ड में आर्यावर्त एकमात्र ऐसा भूखंड है, जहां सामान्य रूप से उल्लू की दो प्रजातियों; आध्यात्मिक और लोकतांत्रिकद्ध की उपलब्धता देखी जा सकती है। आध्यात्मिक उल्लू पक्षी वर्ग से तथा लोकतांत्रिक उल्लू स्तनधारी वर्ग से ताल्लुकात रखता है। एक अमृता; लक्ष्मीद्ध का तो दूसरा नेता का प्रिय माना जाता है क्योंकि पौराणिक परंपराओं की मानें तो आध्यात्मिक उल्लू पर सवार होकर माता लक्ष्मी यात्रा सुख प्राप्त करतीं हैं जबकि लोकतांत्रिक उल्लू पर सवार होकर खद्दरधारी राजनीतिक यात्रा का सुख प्राप्त करते हैं।

अमूमन आध्यात्मिक उल्लू नरक चतुर्दशी के समय तो लोकतांत्रिक उल्लू निर्वाचन के समय महत्वपूर्ण होता है। किंतु दिवाली के ग्यारह दिन पूर्व करवा चौथ वाले दिन दोनों ही उल्लूओं का महात्म्य समान रूप से एक जैसा होता है, क्योंकि उस दिन शादीशुदा महिलाओं के द्वारा दोनों प्रकार के उल्लूओं की समान रूप से पूजा अर्चना की जाती है। आमतौर पर अशुभ अथवा दुर्भाग्य का स्वरूप उल्लू वर्ष में एक दिन नर-नारियों के लिए शुभ स्वरूप हो जाता है। उसी तरह पाँच वर्षों तक दुर्भाग्यपूर्ण जीवन जीने वाला लोकतांत्रिक उल्लू चुनाव के समय नेताओं के लिए शुभ एवं सौभाग्य प्रदाता बन जाता है। अपने-अपने उपासकों द्वारा आध्यात्मिक उल्लू साल में एक बार जबकि लोकतांत्रिक उल्लू पांच वर्षों में एक बार आराध्य की तरह पूजित होता है। एक का निशा से, तो दूसरे का निर्वाचन से प्रत्यक्ष संबंध होता है। परिस्थिति अनुसार यदि दोनों उल्लूओं की नजर और नजरिया पर गौर करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पक्षी समुदाय का उल्लू शाश्वत को देखता है जबकि स्तनधारी वर्ग का उल्लू श्जातश् को देखता है।

दीपावली में उल्लू का दर्शन महालक्ष्मी के साक्षात दर्शन का प्रतीक माना जाता है, क्योंकि उल्लू को माता लक्ष्मी का वाहन माना जाता है। विडंबना है कि दीपावली में पूजन या टोटका टोना सिद्ध करने के लिए उपयोग में लाया जाने वाला उल्लू लक्ष्मी प्रिय होने के बावजूद भी फाइव जी युग में प्रतिष्ठा पाने से वंचित है। ऐसी धारणा है कि उल्लू बनना मुर्खता का और उल्लू बनाना होशियारी का द्योतक है। जिसकारण बुद्धिजीवी से मंद बुद्धि तक हर लेवल और कैटगरी का आदमजात स्वयं लक्ष्मी जी का वाहन बनने की बजाय सामने वाले को बनाने में घोर आस्था रखता है।

उल्लू चरितमानस की व्याख्या प्रसंग के तहत उपरोक्त दोनों प्रकार के उल्लू की चर्चा के दौरान एक अन्य प्रकार के अति महत्वपूर्ण डिजिटल उल्लू की चर्चा हमसे छूट ही गई। दरअसल कार्डेटा फाइलम के प्राइमेट्स के एप्स; पूर्व मानवद्ध और एव्स ; पक्षीद्ध के अलावा एक उल्लू नामक एप्प भी इन दिनों काफी सुर्खियों में है। जिसमें नग्न वेबसीरीज को नग्न आंखों से देखने के लिए भारतीय उल्लू देर रात तक तन्मयता से जगे रहते हैं।

विनोद कुमार 'विक्की'
व्यंग्यकार, बिहार

शुभ दीपावली
भवानीसिंह झाला
समाजसेवी, कॉन्ट्रेक्टर्स PWD
पीपला, कुंभलगढ़, जिला राजसमंद
भगवतसिंह झाला
सरपंच, पीपला

शुभ दीपावली
लक्ष्मण तेली
मेवाड़ मिनरल्स
बामन टूकड़ा, जिला-राजसमंद

शुभ दीपावली
अर्जुनसिंह देवरिया
समाजसेवी
देवरिया टावर, हाउसिंग बोर्ड, राजसमंद

:: उपलब्ध सुविधाएं ::
सोनोग्राफी, इमरजेंसी व 24 घंटे
नॉर्मल डिलेवरी व ऑपरेशन सुविधा
दुरबीन द्वारा ऑपरेशन सुविधा
स्त्री रोग एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
सामान्य व गहन चिकित्सा परामर्श
खून, पेशाब की जांच एवं डिजिटल एक्स-रे
दूरबीन द्वारा पेट व स्त्री संबंधी समस्याओं
बांझपन आदि का निदान व उपचार
बिना चीरे का बच्चेदानी का ऑपरेशन
डॉ. रूपेश पाटील
MBBS, DGO
RMC 43961
स्त्री रोग एवं प्रसूति विशेषज्ञ
डॉ. योगेश गुप्ता
MBBS, DA
RMC 25383
समस्त क्षेत्रवासियों को प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं
गुप्ता हॉस्पिटल
सोनोग्राफी
गुप्ता हॉस्पीटल
Contact
02904- 294438
M. 9983777299
ऑफ मॉर्डन मेडिसिन प्रा. लि.
भारत गैस एजेन्सी के पास, मैन बसस्टेण्ड, तीन बत्ती चौराहा, देवगढ़

दीपोत्सव
पर
हार्दिक
बधाई
एवं
मंगल
शुभकामनाएं
jaivardhannews.com
जयवर्द्धन
NEWS

शुभ दीपावली
देवीलाल सिंधल, हेमराज सिंधल,
भोलीराम सिंधल, हीरालाल सिंधल,
नरोतम सिंधल, रमेश सिंधल
देवीलाल सिंधल
किसान ग्रुप, केलवा (राजसमंद)

दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
विजयसिंह
ग्राम विकास अधिकारी
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
नोकलाल कुमावत
सरपंच
ग्राम पंचायत भाणा, पंचायत समिति राजसमंद

"त्यौहारों को त्यौहार रहने दो"

बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो, अपने पांडित्य का बखान रहने दो। कुछ प्रेम प्यार का वितान रहने दो, अलसाई संस्कृती में जान रहने दो। बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।।

भाग दौड़ की जिंदगी में प्राण रहने दो, अपनी विद्वता की खींचतान रहने दो। नई पीढ़ी में सभ्यता का मान रहने दो, बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।।

आस्था, श्रद्धा, उपासना, दान रहने दो, रिश्तों में थोड़ा आदान-प्रदान रहने दो। भद्रा, प्रदोष काल ये भ्रमजाल रहने दो, बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।।

त्यौहार आने से पहले आ जाते हो, जोड़-तोड़ कर शुभ मुहूर्त बताते हो। सोशल मीडिया पर तुम छा जाते हो, अच्छे मुहूर्त का गुणा-भाग रहने दो। पंडित जी क्यों शास्त्र लेकर तन रहे हैं?

दीपावली दो दिवस के योग बन रहे हैं, दो दिन लक्ष्मी पूजन में भी क्या हर्ज हैं? नवरात्रि भी तो हमारी 9 दिवस दर्ज हैं।
ज्योतिषीय शास्त्रार्थ ज्ञानियों का मेल है,'राम जी' मीडिया का उपजाया खेल है, युवाओं में संस्कृति का सम्मान रहने दो, बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।।

राम गोपाल आचार्य
9929215040

शुभ दीपावली
नानालाल सिंधल
अध्यक्ष - जिला मार्बल कटर एसोसिएशन
अध्यक्ष - जिला मिनरल
ग्राइडिंग पाउडर प्लांट एसोसिएशन

दीपोत्सव पर हार्दिक
बधाई एवं शुभकामनाएं
Quartz, Feldspar,
Chinaclay
Guru Kripa Minerals
Durga Kund, Miyari Road, Village Miyari, Rajsamand

शुभ दीपावली
JK Marble
Leading Marble Mines of the World
Arora's J.K. Natural Marbles Ltd.
Morwar Rajsamand, Rajasthan - 313324

शुभ दीपावली
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
वगताराम गमेती
सरपंच
सज्जन बाई रेबारी
उपसरपंच
विक्रमसिंह राठौड़, ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत कालीवास
पंचायत समिति देलवाड़ा, जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
ग्राम पंचायत घोड़च
पंचायत समिति देलवाड़ा
देवीलाल खटीक
सरपंच
भगवतसिंह देवड़ा
उप सरपंच
रघुवीरसिंह चुंडावत
ग्राम विकास अधिकारी

शुभ दीपावली
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
ग्राम पंचायत बिलोता
पंचायत समिति देलवाड़ा
दोली बाई गमेती
सरपंच बिलोता
शांता डांगी
उप सरपंच बिलोता
बाबुड़ी बाई गमेती
पंचायत समिति सदस्य देलवाड़ा

पांच दिवस की दीपावली

दीपावली का त्यौहार वैसे तो पूरे भारत में मनाया जाता है, लेकिन इस रोशनी के पर्व को आज कई देश भी बड़े ही हर्ष उल्लास के साथ मनाते हैं, भारत की संस्कृति आज के समय में पूरे विश्व को अपनी और आकर्षित करती हुई दिखाई दे रही है, उसे आज किसी भी परिदृश्य में आप देखेंगे तो विदेशों में भी हमारी यह संस्कृति, उत्सव, त्योहार को बड़े ही उल्लास के साथ मनाते हुए देखा जा सकता है।

वैसे तो इस रोशनी के पर्व में कई तरह की मिठाइयां बनाई जाती है, रंग-बिरंगे पटाखे फोड़े जाते हैं, घरों पर रोशनी की जाती है, और यह पांच दिवसीय त्यौहार दीपोत्सव के नाम से बहुत ही आनंद के साथ मनाया जाता है। पहले दिवस पर भगवान धन्वंतरि की पूजा की जाती है। धनवंतरी भगवान को आयुर्वेद का जनक कहा जाता है, उनकी पूजा करने का मुख्य उद्देश्य यही है की आमजन हमेशा स्वस्थ एवं निरोगी रहे। दूसरे दिवस पर रूप चतुर्दशी पर्व मनाया जाता है, इस पर्व में शरीर की सफाई को मुख्य रूप से लिया जाता है, क्योंकि जीवन में व्यक्ति जब स्वस्थ रहता है और नव परिधान पहनता है तो उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता हुआ दिखाई देता है। फिर तीसरे दिन दीपावली का पर्व आता है, उसमें चारों ओर खुशियां ही खुशियां दिखाई देती है, हर घर को रंग रोगन के द्वारा सजाया जाता है, घर के बाहर रंगोली बनाई जाती है, मुख्य द्वार पर पल्लव के पत्तों और फूलों की बंदरवाल लगाई जाती है, रंगीन रोशनी से पूरे घर को सजाया जाता है, और माता लक्ष्मी, सरस्वती और गणेश जी की पूजा की जाती है, इस रोज आतिशबाजी की जाती है, और विविध प्रकार के व्यंजन और मिठाइयां बनाए जाती हैं, व्यापार में भी यह दिन बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। दीपावली पर नए खाते बही के पूजन के साथ व्यापार की शुरुआत की जाती है, पूरा परिवार संयुक्त रूप से इस पर्व को बड़े ही हर्ष उल्लास के साथ मनाता है और अपने आने वाले वर्ष के लिए माता लक्ष्मी से सुख समृद्धि और निरोग का वरदान मांगता है।

चतुर्थ दिवस गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है, जहां पर परिवार के लोग अपने इष्ट मित्रों और सगे संबंधियों के यहां मिलने जाते हैं, और मिठाई भेंट करके उनको भी मंगल शुभ कामनाएं देते हैं। पूरे भारतवर्ष में कई मंदिरों में अन्नकुट का भोग प्रभु के धराया जाता है, और पशुधन को सजाया जाता है,

अंतिम और पांचवा दिवस भाई दूज के रूप में मनाया जाता है, इस पर्व में बहन अपने भाई को अपने घर पर बुलाती है और उसे विविध प्रकार के व्यंजन का प्रीतिभोज करवाती है। उसके तिलक लगाकर उसके दीर्घायु होने की कामना करती है, भाई भी बहन की रक्षा का वचन देता है, यह पांच दिवसीय त्योहार अपने आप में बहुत ही अद्भुत और आनंद देने वाला होता है, जहां पर हर व्यक्ति एक दूसरे की खुशी में शामिल होकर उसकी मंगल कामना करता है।

आप सभी को भी इस रोशनी के पर्व की मंगल शुभकामनाएं।।

राहुल दीक्षित RD
साहित्यकार,
काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली, 9001011755

भाई दूज

पंच दिवसीय त्यौहार दीपावली के पाँचवें दिन संपूर्ण भारतवर्ष में भाई दूज का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भैया दूज को यम द्वितीया भी कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार भैयादूज अथवा यम द्वितीया को मृत्यु के देवता यमराज का पूजन किया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई का तिलक करके, उसकी लंबी उम्र की कामना करती हैं। भाई दूज के दिन विवाहित स्त्रियां अपने भाइयों को घर बुलाती हैं और उन्हें अपने हाथों से बना खाना खिलाती हैं। इसके बदले भाई अपनी बहन को स्नेह युक्त उपहार प्रदान करते हैं। ब्रजमंडल में तो इस दिन बहनें भाई के साथ यमुना स्नान भी करती हैं, एवं भाई के कल्याण और वृद्धि की इच्छा से यमुना तट पर भाई-बहन का समवेत भोजन कल्याणकारी माना जाता है।

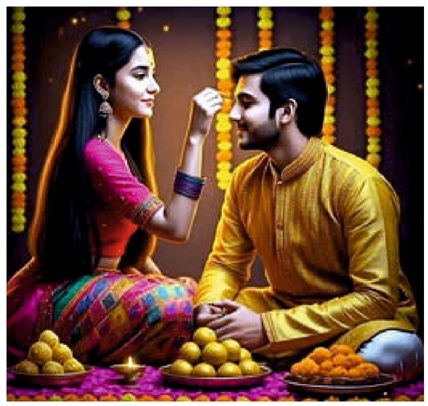

दीपोत्सव का समापन दिवस, कार्तिक शुक्ल द्वितीय, जिसे भैयादूज कहा जाता है। इस पर्व के संबंध में पौराणिक कथा इस प्रकार है.... सूर्य देव की पत्नी संज्ञा से दो संतानें थीं- पुत्र यमराज तथा पुत्री यमुना। संज्ञा सूर्य का तेज सहन न कर पाने के कारण एक दिन अपनी छायामूर्ति का निर्माण कर उसे ही अपने पुत्र-पुत्री को सौंपकर वहां से चली गई। छाया को यम और यमुना से किसी प्रकार का लगाव न था, किंतु यम और यमुना में बहुत प्रेम था।

यमुना अपने भाई यमराज के यहां प्रायः जाती और उनके सुख-दुख की बातें पूछा करती। यमुना यमराज को अपने घर पर आने के लिए कहती, किंतु व्यस्तता तथा दायित्व बोझ के कारण वे उसके घर न जा पाते थे।

एक बार कार्तिक शुक्ल द्वितीय को यमराज अपनी बहन यमुना के घर अचानक जा पहुंचे। बहन यमुना ने अपने सहोदर भाई को बड़ा आदर-सत्कार किया। विविध व्यंजन बनाकर उन्हें भोजन कराया तथा भाल पर तिलक लगाया। यमराज अपनी बहन से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने यमुना को विधिव भेंट समर्पित की। जब वे वहां से चलने लगे, तब उन्होंने यमुना से कोई भी मनोवांछित वर मांगने का अनुरोध किया।

यमुना ने उनके आग्रह को देखकर कहा- 'भैया ! यदि आप मुझे वर देना ही चाहते हैं तो यही वर दीजिए कि, आज के दिन प्रतिवर्ष आप मेरे यहां आया करेंगे और मेरा आतिथ्य स्वीकार किया करेंगे। इसी प्रकार आज के दिन जो भाई अपनी बहन के घर जाकर उसका आतिथ्य स्वीकार करे तथा उसे भेंट दें, उसकी सब अभिलाषाएं आप पूर्ण किया करें एवं उसे आपका भय न हो।"

यमुना की प्रार्थना को यमराज ने स्वीकार कर लिया। तभी से बहन-भाई का यह त्योहार मनाया जाने लगा।

वस्तुतः इस त्योहार का मुख्य उद्देश्य है भाई-बहन के मध्य सौमनस्य और सद्भावना का पावन प्रवाह अनवरत प्रवाहित रखना तथा एक-दूसरे के प्रति निष्कपट प्रेम को प्रोत्साहित करना है। भाई-बहन के स्नेह के प्रतीक भाई-दूज के इस पावन पर्व पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं! सभी भाई-बहनों के बीच यह अटूट स्नेह व विश्वास सदैव यूँ ही बना रहे।

सोनल मंजू श्री ओमर
लेखिका व साहित्यकार
राजकोट, गुजरात

KRISHNA HOSPITAL
दीपावली के पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
कृष्णा बाल चिकित्सालय
डॉ. सत्यप्रकाश त्यागी-(M.D. Peds, MIAP)
24/7 परामर्श सुविधा उपलब्ध
● ओ.पी.डी., आई.पी.डी. (01 से 21 वर्ष) ● टीकाकरण (वेक्सीनेसन)
● एक्स-रे सुविधा ● एन.आई.सी.यू. ● सभी प्रकार की खुन व मूत्र की जांच सुविधा।
● ऑक्सीजनेशन ● फोटो थेरेपी ● निबुलाइजेशन ● ऑक्सीमैट्री
● रेडिएन्ट वॉर्मर ● इन्हेलर थेरेपी ● इन्डोर-आउटडोर फेसिलीटी
● नवजात शिशु का चेकअप
● कुपोषण ● भुख न लगना
● वजन न बढ़ना ● पीलिया
● शारीरिक विकास न होना
● निमोनिया, मलेरिया
● बिस्तर में पेशाब करना
● सुस्ती करना ● बुखार
● खुन की कमी
देवगढ़- कामलीघाट रोड, देवगढ़, जिला राजसमंद, मो. 8290963036, 9462657388

शुभ दीपावली
हरिसिंह राठौड़ 'करेड़ा'
अध्यक्ष
मिनरल्स ग्राइडिंग पाउडर प्लांट करेड़ा जोन
एवं समस्त सदस्यगण

दीपोत्सव पर हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं
कविश चोरड़िया
श्री शिवशक्ति मार्बल माइंस
थोरिया, तहसील कुंभलगढ़, जिला राजसमंद

संपर्क सूत्र :
ताराचंद : 9414168124
अशोक : 9462398300
विशाल : 6376976364
सूरज : 8619531788

घर जैसा खाना घर जैसा रहना

श्री बालाजी पैलेस

होटल
रेस्टोरेंट
गेस्ट हाउस

कामलीघाट ओवरब्रिज के पास, राजसमंद की तरफ, हाइवे 8 किनारे, देवगढ़, राजसमंद 313331

दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

मधुसुदन गोस्वामी

श्रद्धा मार्मो ग्रेनाइट प्रा.लि.

कोटड़ा, तहसील देवगढ़, जिला राजसमंद

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

आपके परिवार पर मां लक्ष्मी का हाथ हो,
मां सरस्वती का साथ हो,
घर पर भगवान गणेश का निवास हो,
मां दुर्गा के आशीर्वाद के साथ ही
आपके जीवन में प्रकाश ही प्रकाश हो।
आप सभी को दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं

मोहनलाल गुर्जर
संचालक

श्री बालाजी इंटरप्राइजेज

चिकलवास, ग्राम पंचायत सांयों का खेड़ा, जिला राजसमंद

Spread Happiness

Deepotsav, known widely as Diwali, is more than a festival—it's an experience that lights up not only our homes but our hearts. It's a time when families and friends draw closer, rekindling bonds and connections that may have dimmed in the hustle of everyday life. For fifteen days, a unique energy fills the air, as people prepare to celebrate with joy, love, and a sense of unity. This festival ignites a warmth that radiates across communities, reminding us of the values of kindness, togetherness, and compassion that are at the heart of Bharat's culture.

In Bharat, every month brings its own festivities, giving families frequent opportunities to gather, reconnect, and rejuvenate. Our festivals offer an escape from routine, a chance to feel the richness of life and relationships. Yet, Diwali, the Festival of Lights, holds a special place in the hearts of millions. Often, however, we lose sight of its true essence, focusing only on the material aspects—purchasing goods, decorating homes, and planning parties. But the heart of Diwali lies in something far deeper.

Diwali invites us to celebrate with open hearts. It's not just about lights and gifts but about illuminating our lives with genuine connections and shared moments. This festival encourages us to gather with loved ones, to sit together, laugh freely, and share in each other's joys and sorrows. It is a reminder to practice compassion, to be there for others, and to live with an open, giving spirit.

Diwali's true essence is about transcending boundaries. While we may be naturally inclined to gather with family, this is a time to extend our love to others, to those who may not be related by blood but are bound by the spirit of humanity. Let us recognize those who share the same earth, breathe the same air, and live with the same dreams. In a world that often divides, Diwali urges us to see each other as one, to acknowledge our shared humanity.

This festival is a call to shed material desires and embrace the divine. Diwali offers a moment to grow spiritually, to recognize that joy comes not from possessions but from being present with others. As we light lamps and decorate our homes, let us also illuminate our minds and hearts, fostering a sense of boundless compassion and togetherness. This Diwali, let's remember the real purpose of the festival: to celebrate not just with lights but with the warmth of love, unity, and kindness for all those around us.

Wishing all our readers a great spirit this Diwali.

Manisha Lashkari
principal
Pragati Secondary School
Railmagra, Rajsamand
manishlashkari.blogspot.com

शुभ दीपावली
मनीष राठी
अध्यक्ष
नगरपालिका नाथद्वारा, जिला राजसमंद
BHARAT
JODO
YATRA

शुभ दीपावली
कैलाश मेवाड़ा
अध्यक्ष
नगरपालिका आमेट, जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
शोभालाल रेगर
अध्यक्ष
नगरपालिका देवगढ़, जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
भैरूलाल वीरवाल
प्रधान - पंचायत समिति खमनोर, जिला राजसमंद

दीपावली के पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
जयदयाल कुमावत
कॉन्ट्रेक्टर्स पीडब्ल्यूडी राजसमंद

शुभ दीपावली
ROCKS FOREVER
Rocks Forever
NEOTECH QUARTZ SURFACE
a saga of trust & reliability
WORKS AT
UNIT-I : PLOT NO. B.436, ROAD NO. 18A, BHAMASHAH
RIICO INDUSTRIAL AREA KALADWAS, UDAIPUR (RAJASTHAN) INDIA
UNIT-II : BEHING POWER HOUSE, BARWA CHOURAHA
VILLAGE, BILOTA, DELWARA, RAJSAMAND (RAJASTHAN) INDIA

दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
दिनेश बड़ाला
समाजसेवी, पूर्व उप प्रधान व वरिष्ठ भाजपा नेता
पंचायत समिति व जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आमजन से अपील
खुले में कचरा न फेंके,
स्वच्छता में सहयोग करें
सीता गणेश पालीवाल
सरपंच
ग्राम पंचायत पीपरड़ा (राजसमंद)
गणेश पालीवाल
समाजसेवी

दीपावली के पावन पर्व प्रदेशवासियों
को हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं
माइंस
गैंगसा
प्रयाग मार्बल
गणपति मार्बल
वनी, सापोल, तहसील व जिला राजसमंद
हाइवे 8, मोरचणा, तहसील व जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
अरावली बोरिंग
होल व ब्लास्टिंग
के लिए संपर्क करें
असगर अली सोरगर : 9929964884
शरीफ अली सोरगर : 9829595466, 9001339071
सूरजपोल के अंदर, केलवा, तहसील व जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
गौरव मार्बल
वनी, सापोल, तहसील व जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
अशोक रांका
पूर्व सभापति व जिला उपाध्यक्ष
भाजपा राजसमंद
गुलाबचंद कटारिया
राज्यपाल पंजाब
दीया कुमारी
उप मुख्यमंत्री

दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
धर्मेश टांक, पीपरड़ा
9460510273
कालिका कंट्रक्शन
पीपरड़ा, तहसील व जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
राजकुमार खटीक शांतिलाल खटीक
समाजसेवी व कान्ट्रेक्टर PWD, नाथद्वारा, जिला राजसमंद

दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
बद्रीलाल पालीवाल,
धर्मेश पालीवाल
भरत पालीवाल
पूर्व उप प्रधान-राजसमंद
सुभ्राता मार्बल, निर्झरना/केलवा

भैरूसिंह सोलंकी
नरेंद्रसिंह सोलंकी
कुन्दनसिंह सोलंकी
रघुवीरसिंह सोलंकी
विरेंद्रसिंह सोलंकी
ठि. झांझर
शुभ
दीपावली
फेमस व्हाइट मार्बल
भवानी मार्बल माइंस
वनी, सापोल, तहसील व जिला राजसमंद, 8209882144

दीपोत्सव
की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक मंगल शुभकामनाएं
राजमहल ग्रुप
केलवा-आमेट रोड, सियाणा, जिला राजसमंद

शुभ दीपावली
अरविंदसिंह राठौड़
प्रधान - पंचायत समिति व जिला राजसमंद

दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

कुलदीपसिंह शेखावत
सिविल इंजीनियर

पूरणसिंह शेखावत

Govt. Contractor

C Class PWD,Municipal, Irrigation

अध्यक्ष नगरपरिषद कॉन्ट्रेक्टर्स एसोसिएशन राजसमंद

शुभ दीपावली

- रणवीरसिंह शेखावत
- कानसिंह राठौड़
- कल्याणसिंह राठौड़

थोरिया, तहसील कुंभलगढ़, जिला राजसमंद

✸ राधाकृष्णा मार्बल माइंस

✸ धनलक्ष्मी मार्बल ✸ मां भवानी मार्बल

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन